

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥ ५-२३ ॥

Śaknotīhaiva yaḥ soḍhum prākśarīravimokṣanāt ।

Kāmakrodhodbhavaṃ vegaṃ sa yuktaḥ sa sukhī naraḥ ॥ 5-23 ॥

जो मनुष्य शरीर छोड़ने से पहले काम और क्रोध से उत्पन्न होने वाले वेग को सहन कर लेता है, वास्तव में वही भगवान् से जुड़ा होता है, और वही सुखी पुरुष है।

The man who, before the fall of the body on death, in life itself, has the capacity to face the emotional storm caused by love and anger, is really the man of peace and dedication both to the life of action and to Brahman.

योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥ ५-२४ ॥

Yo 'ntaḥsukho 'ntarārāmastathāntarjyotireva yaḥ ।

Sa yogī brahmanirvāṇaṃ brahmabhūto 'dhigacchati ॥ 5-24 ॥

जो मनुष्य आत्मा में सुखी है, अंतर शांत है, अंतर प्रकाश है, वही सुखी है, वही कर्मयोगी है, क्योंकि वह ही ब्रह्म होकर सर्व ब्रह्म निर्वाण प्राप्त करता है।

In short, whoever is at peace within, happy with the atma, and blessed with light within, he is the real yogi, he becomes one with Brahma and he achieves the freedom from existence, one with the Spirit, free from life and death.

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥ ५-२५ ॥

Labhante brahmanirvāṇamṛṣayaḥ kṣīṇakalmaṣāḥ ।

Chinnadvaidhā yatātmanaḥ sarvabhūtahite ratāḥ ॥ 5-25 ॥

अंदर की शांति प्राप्त करके, ऋषि ब्रह्म निर्वाण प्राप्त करते हैं। उनके संशय-समाप्त मन शांत हैं। प्राणि मात्र का हित चाहने वाले हैं।

Sages, their darkness and ignorance gone, their doubts and dualities destroyed, their atma ever dedicated to enlightenment, always engaged in the good of living beings, they attain to divine freedom.

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥ ५-२६ ॥

Kāmakrodhaviyuktānāṃ yatīnāṃ yatacetasām ।

Abhito brahmanirvāṇaṃ vartate veditātmanām ॥ 5-26 ॥

वे काम, क्रोध से निर्लिप्त हैं, मन उनके वश में है, आत्मदर्शन करके उन्होंने ब्रह्म निर्वाण इस जन्म में ही प्राप्त कर लिया है।

They having eliminated personal desire and anger, their mind and awareness always engaged in spiritual discipline, their self-awareness always under divine control, their atma self-realized, they experience the divine freedom, always all around.

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः ।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥ ५-२७॥

Sparśāṅkṛtvā bahirbāhyāṁśchakṣuścaivāntare bhruvoḥ ।
Prāṇāpānau samau kṛtvā nāsābhyantaracāriṇau ॥ 5-27 ॥

बाह्य विषयों पर ध्यान न देकर, भ्रुवों के माध्यम से नेत्रों के बीच में ध्यान को केंद्रित करके, नासिका में चलते प्राण और अपान को सम करके।

Having dispelled all external stimulants, concentrating the light of the inner eye in the center of the eyebrows, with prana and apana both balanced, then stilled in the movement through the nostrils....

यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥ ५-२८॥

Yatendriyamanobuddhirmunirmokṣaparāyaṇaḥ ।
Vigatecchābhayakrodho yaḥ sadā mukta eva saḥ ॥ 5-28 ॥

मोक्ष प्रेमी मुनि इंद्रियों, मन और बुद्धि को वश में करे और इस प्रकार वह साधक भय और क्रोध को जीते, वास्तव में वही सदा जीवन मुक्त रहता है।

The meditating sage, his sense, mind and intelligence all controlled, concerned with divine freedom, and free from desire, fear and anger, is in fact always free.

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥ ५-२९॥

Bhoktāraṁ yajñatapasāṁ sarvalokamaheśvaram ।
Suhṛdaṁ sarvabhūtānāṁ jñātvā māṁ śāntimṛcchati ॥ 5-29 ॥

जो यज्ञ और तप की साधना करता है, सर्व लोक महेश्वर का ध्यान करता है, प्राणी मात्र से प्रेम करता है, वही मुक्त हो कर शांति प्राप्त करता है, वही कर्म-योगी है, वही कर्म-सन्यासी है।

Knowing me, the lord of all the worlds of life, receiver of all yajnas and tapas as (charities, creative acts and mental and spiritual disciplines), and friend of all forms of existence, the sage attains peace and happiness and comes to me.

CHAPTER-6

श्रीभगवानुवाच ।

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ।

स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ॥ ६-१ ॥

Śrībhagavān uvāca ।

Anāśritaḥ karmaphalaṃ kāryaṃ karma karoti yaḥ ।

Sa saṁnyāsī ca yogī ca na niragnirna cākriyaḥ ॥ 6-1 ॥

श्रीभागवन् बोले:

जो कर्म-फल की चिन्ता किए बिना कर्म करता है, कर्म को अपना धर्म मान कर कर्म करता है, वह कर्म-संन्यासी भी है और कर्म-योगी भी है। वह यज्ञ भो करता है और कर्म भी करता है।

Says Shri Bhagawan:

The person who does his karma as duty, independent of the fruit, is a sanyasi as well as a yogi. He is neither non-yajnic nor non-doer (he is a Karm-Sanyasi as well as karma-yogi).

यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव ।

न ह्यसंन्यस्तसङ्कल्पो योगी भवति कश्चन ॥ ६-२ ॥

Yaṁ saṁnyāsamiti prāhuryogaṁ taṁ viddhi pāṇḍava ।

Na hyasaṁnyastasaṅkalpo yogī bhavati kaścana ॥ 6-2 ॥

हे पांडव, जिसको जन साधारण में कर्म-संन्यास कहते हैं उसी को तम कर्म-योग भी समझो। कोई भी मनुष्य कर्म-फल पर संन्यास के बिना कर्म-योगी नहीं हो सकता।

Hey Pandava, what they call saṁnyasa, the same, you should know as yoga. No one becomes a yogi unless one gives up his decision for action as something personal and rises above that.

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते ।

योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥ ६-३ ॥

Ārurukṣormuneryogaṁ karma kāraṇamucyate ।

Yogārūḍhasya tasyaiva śamaḥ kāraṇamucyate ॥ 6-3 ॥

योगारूढ़ होने की इच्छा होने पर योगी को निष्काम कर्म करना आवश्यक है, और योगारूढ़ हो जाने पर योगी के लिए मन की शांति आवश्यक है।

If one wants to be a yogi, the cause for yoga has to be action (yoga is then bound to be the result by the laws of Nature). And when one has attained the state of yoga and wants to achieve lasting divine peace, the cause of that divine peace is tranquillity.

यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते ।
सर्वसङ्कल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ ६-४ ॥

*Yadā hi nendriyārtheṣu na karmasvanuṣajjate ।
Sarvasaṅkalpasamnyāsī yogārūḍhastadocyate ॥ 6-4 ॥*

योगी को इंद्रियों के विषयों में कोई रुचि नहीं चाहिए। न उसे कर्म करने में कोई कर्तव्य भाव होना चाहिए। जब योगी को कर्म करने में कोई ऐसी भावना नहीं रहती कि मैं कर्म करता हूं तब उसे योगारूढ़ शमभक्ता चाहिए।

When a person is interested neither in the objects and pleasures of the senses, nor in Karmas, even though, on the personal level, then he is called 'settled in the yogic state'.

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥ ६-५ ॥

*Uddharedātmanātmānaṃ nātmanamavasādayet ।
Ātmaiva hyātmano bandhurātmaiva ripurātmanaḥ ॥ 6-5 ॥*

योगी को परमात्म-भाव से अपने आत्मा को उन्नत करना चाहिए। अपने आत्मा को नीचे गिराना, यह मानना कि मैं कुछ नहीं हूँ, यह ठीक नहीं है। क्योंकि आत्मा ही आत्मा का मित्र है और आत्मा ही आत्मा का शत्रु भी है।

Let the Yogi raise the atma by the atma (not by senses or pleasures of the mind). Let not the yogi denigrate the atma, because atma is the friend of atma, and atma (working through mind and sense) is also the enemy of atma.

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥ ६-६ ॥

*Bandhurātmatmanastasya yenātmaivātmanā jitaḥ ।
Anātmanastu śatrutve vartetātmaiva śatruvat ॥ 6-6 ॥*

आत्मा ही आत्मा का बंधु है, धन्य हैं वह लोग जिन्होंने अपने आत्मा को जीत लिया है, या जिनका मन आत्मा के वश में है। किन्तु यदि मन और इंद्रियों को आत्मा न जीत सके तो आत्मा ही अपना शत्रु बन जाता है।

For one who wins divine peace and happiness through spiritual discipline and divine grace, atma is the friend of atma. And where atma behaves as an enemy because it gives itself up for the mind and senses, there atma is the enemy of atma.

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः ॥ ६-७ ॥

*Jitātmanah praśāntasya paramātmā samāhitaḥ ।
Śītoṣṇasukhaduḥkheṣu tathā mānāpamānayoḥ ॥ 6-7 ॥*

जिनका आत्मा अपने वश में है, जिनका मन शान्त है, उसके अंदर मानो परमेश्वर का बास है। वह सर्दी, गर्मी, सुख-दुःख, मान-अपमान, इन सबके ऊपर उठ जाता है।

When a person has conquered the atma (beyond the mind and sense) and is settled in peace and divine freedom, then Brahma Atma is within and close at hand, because, then, the atma has crossed over hot and cold, pleasure and pain, and also over honor and approval as well as over dishonor and disapproval.

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः ।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः ॥ ६-८ ॥

*Jñānavijñānatṛptātmā kūṭastho vijitendriyaḥ ।
Yukta ityucyate yogī samaloṣṭāśmakāñcanaḥ ॥ 6-8 ॥*

जिसका आत्मा ज्ञान और विज्ञान से तृप्त है, जिसकी अपनी आंतरिक स्थिति में विकार नहीं है, जिसका मन और इंद्रियां वश में हं। जिसके लिए मिट्टी, पत्थर और स्वर्ण सब एक जैसे हैं। वह योगी ईश्वर से जुड़ा हुआ है।

When a person is self-fulfilled within with knowledge and practical experience of knowledge as wisdom, at the deepest in peace with perfect control of mind and sense, then the person, equanimous with gold, a stone and with a clod of earth, then he is called a yogi at one with the Paramatma.

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेषबन्धुषु ।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ॥ ६-९ ॥

*Suḥṛnmitrāryudāsīnamadhyasthadveṣyabandhuṣu ।
Sādhuṣvapi ca pāpeṣu samabuddhirviśiṣyate ॥ 6-9 ॥*

जो सुहृद् है, मित्र है, बैरी है, उदासीन है, जो न मित्र है, न बैरी है, केवल अंजाना सा है, न बन्धु है, न द्वेष करने वाला है, जो अच्छा है या बुरा, साधु या वैरी, सबके साथ एक समान है, केवल वही विशेष है। वही सच्चा योगी है।

Equanimous and good at heart, undisturbed between friends and foes, personally uninvolved between one's own and others (who for others would be objects of hate and enmity), looking patiently and neutrally, the same way at the virtuous and the sinners, such a man is special, a man of distinction.

योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः ।

एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥ ६-१० ॥

Yogī yuñjīta satatamātmānaṃ rahasi sthitaḥ ।

Ekākī yatacittātmā nirāśīraparigrahaḥ ॥ 6-10 ॥

योगी एकांत में रहने वाला होकर साधना करे। एक अकेला, मन बुद्धि को एकाग्र करके, बिना आशा, बिना परिग्रह ईश्वर आराधना में रमण करे।

The yogi, deep within his mind and spirit, all by himself, the mind and senses all controlled, without desire and expectation, free from greed and possessiveness, should concentrate in meditation on the self and the Supreme Lord, all alone, by himself.

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः ।

नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम् ॥ ६-११ ॥

Śucau deśe pratiṣṭhāpya sthīramāsanamātmanaḥ ।

Nātyucchritaṃ nātinīcaṃ cailājīnakuśottaram ॥ 6-11 ॥

शुद्ध स्थान में आसन लगाकर, न ऊंचा न नीचा, वस्त्र, कुशा या मृगछाल पर साधना करें।

In a clean place in clean environment, let the yogi's seat be steady and undisturbed, let it be neither too high nor too low. Let it be covered with cloth, deer skin or grass.

तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः ।

उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥ ६-१२ ॥

Tatraikāgraṃ manaḥ kṛtvā yatacittendriyakriyaḥ ।

Upaviśyāsane yuñjyādyogamātmaviśuddhaye ॥ 6-12 ॥

ऐसे आसन पर बैठकर मन को एकाग्र करे, मन को एकाग्र करके आत्मा की शुद्धि के लिए साधना करे।

Sit thereon, control the activity of your mind and sense, and engage yourself in yoga for the purification of your mind and consciousness of the spirit.

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः ।

सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ॥ ६-१३ ॥

Samam kāyaśirogrīvaṃ dhārayannacalam sthiraḥ ।

Samprekṣya nāsikāgraṃ svaṃ diśaścānavalokayan ॥ 6-13 ॥

शरीर, सिर और ग्रीवा समान करके, मन को स्थित करके, नासिका के अग्रभाग पर ध्यान लगाए, दिशाओं पर नहीं, चेतना नासिकाग्रह पर रहे।

Keep your body, head and neck balanced and undisturbed, concentrate your vision on the tip of your nose away from wandering over space.

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ।

मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत् मत्परः ॥ ६-१४ ॥

Prasāntātmā vigatabhīrbrahmacārivrate sthitaḥ ।

Manah saṃyamya maccitto yukta āsīta matparaḥ ॥ 6-14 ॥

मन और आत्मा शान्त, निर्भीक, ब्रह्मचर्य व्रत में स्थित, मन, चित्त, आत्मा, ईश्वर संयुक्त, ऐसे योगी साधना करे।

Let your mind and soul be at peace, free from fear, your self and consciousness concentrated on Brahman, the Supreme Self. Collect your mind, concentrate on me, completely joined, nothing but Me.

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः ।

शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति ॥ ६-१५ ॥

Yuñjannevaṃ sadātmānaṃ yogī niyatamānasaḥ ।

Śāntiṃ nirvāṇaparamāṃ matsaṃsthāmadhigacchati ॥ 6-15 ॥

ऐसे योगी, मन बुद्धि आत्मा को एकाग्र करके, शांति प्राप्त करे और ईश्वर-इच्छा से निर्वाण प्राप्त करें।

The yogi thus, always engaged in meditation, his mind well controlled, attains peace and happiness of the Supreme order of freedom which is possible only with me, and in me.

नात्यश्रतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्रतः ।

न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥ ६-१६ ॥

Nātyaśnatastu yogo'sti na caikāntamanaśnataḥ ।

Na cātisvapnaśīlasya jāgrato naiva cārjuna ॥ 6-16 ॥

हे अर्जुन, यह याग-अवस्था बहुत खाने वाले को, न खाने वाले को, बहुत सोने वाले को, बहुत जागने वाले को नहीं मिलती।

Yoga is not possible for one who eats too much or for one who starves himself. Nor is yoga possible for one who sleeps too long, nor, Arjuna, for one who keeps awake too much. (It is possible only for the man of the middle path).

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ ६-१७ ॥

Yuktāhārahārasya yuktaceṣṭasya karmasu ।
Yuktasvapnāvabodhasya yogo bhavati duḥkhahā ॥ 6-17 ॥

जिनका ठीक आहार-विहार है, कर्म-शक्ति और कर्म-चेष्टा भी ठीक है, जिनका सोना, जागना भी ठीक है, ऐसे ही योगी का योग दुःख दूर करने वाला होता है।

The yoga which causes freedom from suffering is possible only for the man of controlled food and controlled movement, or the man of controlled engagement in karma, controlled sleep and controlled wakefulness.

यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते ।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥ ६-१८ ॥

Yadā viniyataṃ cittamātmanyevāvatiṣṭhate ।
Niḥsprhaḥ sarvakāmebhyo yukta ityucyate tadā ॥ 6-18 ॥

जब योगी के मन और चित्त की स्थिति निश्चित रूप से आत्मा परमात्मा में हो जाती है तो योगी सब कामों से अलग होकर निष्काम रूप से आत्मा परमात्मा चेतना में युक्त हो जाता है, या रमण करता है।
What is dedication to yoga? When a person's mind and consciousness is concentrated and stays on in the atma, and, all his engagement remains free from personal desires and interests, then he is called 'dedicated to yoga and Divinity.'

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता ।
योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥ ६-१९ ॥

Yathā dīpo nivāstho neṅgate sopamā smṛtā ।
Yogino yatacittasya yuñjato yogamātmanaḥ ॥ 6-19 ॥

जैसे दीपशिखा निर्वायु स्थान में एक शान्त रूप में रहती है, सो ही रूप-योग अवस्था में योगी के ध्यान का होता है। यही रूप-योगी के आत्मचित्ति का होता है। जब योगी का चित्त ध्यान अवस्था में होता है।

The steady flame:

Just as the flame of a lamp remains steady and flickers not in a place where the air stirs not, that is the simile that describes the state of the yogi's mind and consciousness, whose mind is self-controlled and dedicated to Divinity.

यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया ।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥ ६-२० ॥

*Yatroparamate cittam niruddham yogasevayā /
Yatra caivātmanātmānam paśyannātmani tuṣyati // 6-20 //*

जब योगी की चेतना निरोध अवस्था में होती है, तब योगी अपनी ध्यान अवस्था को देखकर अति प्रसन्न होता है। क्योंकि वह आनंदमय आत्मानन्द होता है।

When/where the mind stays controlled through dedication to yoga, where the mind rises above all selfish motives, where the atma is happy within Parmatma and when the atma is happy with itself, that is the Supreme State of atmananda.

सुखमात्यन्तिकं यत्तद् बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम् ।
वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥ ६-२१ ॥
*Sukhamātyantikam yattad buddhigrāhyamatīndriyam /
Vetti yatra na caivāyam sthitaścalati tattvataḥ // 6-21 //*

यह आनंद अत्यधिक और सूक्ष्म बुद्धि से समझा जा सकता है। क्योंकि उस अवस्था में ध्यान विचलित नहीं होता और आत्मा भी इस अवस्था को जानता तक नहीं वह अवस्था केवल है तो है।

What is Infinite joy is that which is supra-sensuous and understood only by reason and understanding, where the consciousness experiences super-consciousness, where it does not move from the centrality because it is fixed, concentrated therein, experiencing It in the concentrated essence.

यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ।
यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते ॥ ६-२२ ॥
*Yam labdhvā cāparam lābham manyate nādhikam tataḥ /
Yasminsthito na duḥkhena guruṇāpi vicālyate // 6-22 //*

यदि होगी महान् दुःख अवस्था में हो तो भी उस दुःख की अनुभूति योगी को नहीं होती, क्योंकि ब्रह्मानंद की अवस्था से बड़ी अनुभूति कोई और नहीं होती और न ही उससे बड़ा कोई लाभ होता है।
And where having attained the Supreme Brahma joy, it does not recognise anything greater than that, and being there it is not disturbed even by the greatest suffering.

तं विद्याद् दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम् ।
स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥ ६-२३ ॥
*Tam vidyād duḥkhasamyogaviyogam yogasamjñitam /
Sa niśchayena yuktavyo yogo'nirviṇṇacetasā // 6-23 //*

योग की भाषा में दुःख से संपर्क विपर्क समझना चाहिए और योग की ही भाषा में योग का अध्ययन करना चाहिए। निश्चित और अचल मन और बुद्धि से।

Know that that is the state of yoga and Dedication, free from all experience of suffering. That is the state of yoga which for certain is to be dedicated to by the Man whose mind is controlled and definite.

सङ्कल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः ।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः ॥ ६-२४ ॥

*Saṅkalpaprabhavānkāmāṁstyaktvā sarvānaśeṣataḥ ।
Manasaivendriyagrāmaṁ viniyamya samantataḥ ॥ 6-24 ॥*

सर्व संकल्प विकल्प को, सर्व कामनाओं को, पूर्णतया छोड़कर मन और इंद्रियों को नियम पूर्वकवश कर के।

Having risen above all desires born of thoughts and intentions wholly, without expectation, and having controlled all senses by the mind in totality.

शनैः शनैरुपरमेद् बुद्ध्या धृतिगृहीतया ।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ॥ ६-२५ ॥

*Śanaiḥ śanairupamed buddhyā dhṛtiḡrīḥītayā ।
Ātmasaṁsthaṁ manaḥ kṛtvā na kiñcidapi cintayet ॥ 6-25 ॥*

आहिस्ता आहिस्ता बुद्धि और मन को शांत करे, मन को आत्मा में स्थित करके कोई चिन्ता ना करे ।
Slowly by degrees rise above the desires and ramblings of the mind with intelligence supported by the steadiness of the self, thereby the mind under control of atman, let nothing cause you fear or worry.

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् ।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥ ६-२६ ॥

*Yato yato niścarati manaścañcalamasthiram ।
Tatastatato niyamyaaitadātmanyeva vaśaṁ nayet ॥ 6-26 ॥*

जैसे-जैसे मन चलता है, अस्थिर अवस्था में रहता है, वैसे वैसे उस को आत्मा के वश में लाए। मन को शान्त करके ईश्वरध्यान में लगावे।

Whoever or whenever the mind, in the state of disturbance, rebels against discipline, then and there bring it back from rambling with the voice of atma into control of the atma.

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ।

उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥ ६-२७ ॥

*Praśāntamanasaṃ hyenaṃ yoginaṃ sukhamuttamam ।
Upaiti śāntarajasaṃ brahmabhūtamakalmaṣam ॥ 6-27 ॥*

जसे योगी का मन शांत होता है, उसका आनंद भी अधिक होता है, क्योंकि ब्रह्मकृपा से उसका रजोगुण शांत हो जाता है और उसका आत्मिक मैल धुल जाता है।

To such a yogi of peaceful mind comes peace and happiness born of self control and grace of Paramatma, completely free from any impurity whatsoever.

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः ।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥ ६-२८ ॥

*Yuñjannevaṃ sadātmānaṃ yogī vigatakalmaṣaḥ ।
Sukhena brahmasaṃsparśamatyantam sukhamasṅnute ॥ 6-28 ॥*

साधना करते करते उस योगी के मन और आत्मा की शुद्धि हो जाती है, और सुख से उसे अत्यंत ब्रह्मानंद की प्राप्ति होती है।

Such a yogi, free from impurity, always dedicated to yoga and the atman, experiences and attains happiness through peace and joy unlimited by the Grace of Paramatma.

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥ ६-२९ ॥

*Sarvabhūtasthamātmānaṃ sarvabhūtāni cātmani ।
Īkṣate yogayuktātmā sarvatra samadarśanaḥ ॥ 6-29 ॥*

योगी सर्व भूतात्मा के दर्शन करता है, और सब प्राणी ब्रह्म में निवास करते हैं, ऐसा आनंद अनुभव उसको प्राप्त होता है। समदर्शी आत्मयोगी सर्वत्र ऐसा ही अनुभव करता है।

The yogi dedicated to self-control and yoga, with his eye that sees all with love without discrimination, sees the same Paramatma that blesses at heart all forms of life and sees all forms of life in the same One Atma.

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥ ६-३० ॥

*Yo māṃ paśyati sarvatra sarvaṃ ca mayi paśyati ।
Tasyāhaṃ na praṇaśyāmi sa ca me na praṇaśyati ॥ 6-30 ॥*

हे अर्जुन, जो सर्वगत ब्रह्म को सब प्राणियों में देखता है और सर्व प्राणियों को ब्रह्म में देखता है। ब्रह्म उससे नहीं छुपता और वे भी ब्रह्म से नहीं छुपते।

Arjuna, Whoever sees Me everywhere and who sees all in Me, I am an open face for him, never distant, and he is ever close to me, never absent.

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥ ६-३१ ॥

*Sarvabhūtasthitaṃ yo mām bhajatyekatvamāsthitaḥ ।
Sarvathā vartamāno'pi sa yogī mayi vartate ॥6-31 ॥*

जो मुझे (ब्रह्म को) सब प्राणियों में व्याप्त देखता है वह योगी चाहे कहीं भी हो मुझ में (ब्रह्म ही) स्थित है, ऐसा ही उसका अनुभव होता है।

Who soever dedicated to the Unity of life sees me living at the heart of everything, he, though he might be anyone anywhere doing anything or in any condition, he is a yogi and exists in me.

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥ ६-३२ ॥

*Ātmaupamyena sarvatra samam paśyati yo'rjuna ।
Sukham vā yadi vā duḥkham sa yogī paramo mataḥ ॥6-32 ॥*

हे अर्जुन, स्वयम् को देख कर भी जो योगी सब प्राणियों को एक समान ही देखता है वह सुखो हो चाहे दुःखो हो। वही योगी सबसे श्रेष्ठ है।

Arjun, whosoever, everywhere, sees everything the same way as his own atma, whether it is happy or unhappy, he is a yogi of the highest order.

अर्जुन उवाच ।
योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन ।
एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम् ॥ ६-३३ ॥

*Arjuna uvāca ।
Yo 'yaṃ yogastvayā proktaḥ sām्यena madhusūdana ।
Estasyāham na paśyāmi cañcalatvātsthitim sthirām ॥6-33 ॥*

अर्जुन बोले:

हे मधुसूदन, जिस योग के संबंध में आपने चर्चा की है और कहा कि सब प्राणियों को समान समझो मैं उसको नहीं समझ रहा क्योंकि मेरे मन की स्थिति चंचल है, अस्थिर है।

Says Arjuna:

Krishna, this yoga of equanimity of which you have spoken, Madhusudana, I do not see the steady state of this yoga for reasons of the fickleness of the mind.

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥ ६-३४ ॥

*Cañcalam hi manaḥ kṛṣṇa pramāthi balavad dṛḍham ।
Tasyāhaṁ nigrahaṁ manye vāyoriva suduṣkaram ॥ 6-34 ॥*

हे कृष्ण, मन बड़ा चंचल है, बड़े उतार-चढ़ाव हं उसमें। उसका निग्रह बड़ा कठिन है, वायु के समान दुष्कर है।

Krishna, the mind is fickle, impetuous, strong, obstinate and determined. The control of it, I understand, is so difficult, like holding the wind in a cage.

श्रीभगवानुवाच ।
असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥ ६-३५ ॥

*Śrībhagavānuvāca ।
Asaṁśayaṁ mahābāho mano durnigrahaṁ calam ।
Abhyāseṇa tu kaunteya vairāgyeṇa ca gṛhyate ॥ 6-35 ॥*

भगवान् कृष्ण बोले:

महाबाहु, इसमें कोई शक नहीं कि मन बड़ा चंचल है, चलायमान है, इसका वश करना बड़ा दुष्कर है। फिर भी अभ्यास से, वैराग्य से, हे कौन्तेय, इसे वश में किया जा सकता है।

Shri Bhagawan Says:

Mahabahu, no doubt the mind is fickle, difficult to control, still it can be controlled and disciplined with constant practice and non-attachment, O son of Kunti.

असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः ।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः ॥ ६-३६ ॥

*Asaṁyatātmanā yogo duṣprāpa iti me matiḥ ।
Vaśyātmanā tu yatatā śakyo'vāptumupāyataḥ ॥ 6-36 ॥*

मैं मानता हूँ कि मन को योग साधना अवस्था में लाना कठिन है। किंतु फिर भी आत्मा के माध्यम से इसे चेतन करते रहने से मन को वश में लाना संभव है।

In my view yoga is difficult to attain for a man without control of the mind. It is possible, however, to attain for a person who tries by the means he chooses for the control of his mind.

अर्जुन उवाच ।
अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः ।

अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ॥ ६-३७ ॥

Arjuna uvāca /

Ayatiḥ śraddhayopeto yogāccalitamānasaḥ /

Aprāpya yogasamsiddhiṃ kām gatiṃ kṛṣṇa gacchati ॥ 6-37 ॥

अर्जुन बोले:

हे कृष्ण, यदि कोई व्यक्ति यत्न नहीं कर सकता, उसका मन भी चंचल है, लेकिन वह श्रद्धावान है, उसे योग सिद्धियां नहीं मिल सकती। फिर भी उसकी कुछ सिद्धि तो होती होगी, वह क्या गति हो सकती है।

Says Arjuna:

A person fails to try to control his mind because his mind is fickle and strays from yoga. But if otherwise he has faith in yoga, then having failed to attain success in yoga, what end does he come to?

कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति ।

अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥ ६-३८ ॥

Kaccinnobhayavibhraṣṭaśchinnābhramiva naśyati /

Apratiṣṭho mahābāho vimūḍho brahmaṇaḥ pathi ॥ 6-38 ॥

हे महाबाहु, क्या ऐसा श्रद्धावान व्यक्ति ब्रह्म योग से भटककर चलते बादल के समान छिन्न-भिन्न होकर नष्ट हो जाता है।

Does he, alone and lost off from the way of Divinity, end up, lost like a stray cloud in space both from the world and from the path of Divinity?

एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः ।

त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥ ६-३९ ॥

Etanme saṁśayaṃ kṛṣṇa chettumarhasyaśeṣataḥ /

Tvadanyaḥ saṁśayasyāsyā chettā na hyupapadyate ॥ 6-39 ॥

कृष्ण, यही मेरा संशय है, इसका निराकरण केवल आप ही कर सकते हैं। आपके अतिरिक्त इस सच का समाधान कोई दूसरा नहीं कर सकता।

This is my doubt and question, which you alone can remove totally. Other than you there is none in the world who can remove this doubt and answer this question.

श्रीभगवानुवाच ।

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते ।

न हि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति ॥ ६-४० ॥

Śrībhagavānurvāca ।

Pārtha naiveha nāmutra vināśastasya vidyate ।

Na hi kalyāṇakṛtkaścīd durgatim tāta gacchati ॥ 6-40 ॥

श्री भगवान् बोले:

हे पार्थ, श्रद्धावान् व्यक्ति स्वात्मा का कल्याण करने वाला होता है। आत्म कल्याण करने वाले पुरुष का कभी विनाश नहीं होता, न इस लोक में न पर लोक में। श्रद्धावान् पुरुष की कभी भी दुर्गति नहीं होती। योग-भ्रष्ट व्यक्ति आत्मा-भ्रष्ट नहीं होता।

Says Shri Bhagawan:

Partha, neither here nor there does such a man perish like a stray cloud. No one who is on the path of good comes to such a negative end.

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः ।

शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥ ६-४१ ॥

Prāpya puṇyakṛtām lokānuṣitvā śāśvatīḥ samāḥ ।

Śucīnām śrīmatām gehe yogabhraṣṭo'bhijāyate ॥ 6-41 ॥

श्रद्धावान् व्यक्ति योग-भ्रष्ट जीवन जीकर परलोक में वर्षों तक पुण्य लोक में रहता है। और फिर श्रीयुक्त परिवार में पुनर्जन्म प्राप्त करता है। उस शुद्ध परिवार में वह अपना साधना को आगे ले जाता है।

Having come to virtuous circumstances, and having lived and enjoyed for so many years, the man of faith is reborn in the house of pure and prosperous parents. This is the end of the man fallen off (failed in) the success of yogic attainment.

अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम् ।

एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ॥ ६-४२ ॥

Athavā yogināmeva kule bhavati dhīmatām ।

Etaddhi durlabhataraṃ loke janma yadīdṛśam ॥ 6-42 ॥

वह योगी योगीपरिवार में ही पुनर्जन्म लेता है और बुद्धिमान परिवार में साधना करता है। ऐसा पुनर्जन्म भी दुर्लभ होता है।

Or he is reborn in the family of yogi and learned people. This kind of rebirth also is rare, difficult to have, in the world.

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम् ।

यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥ ६-४३ ॥

Tatra taṃ buddhisamyogaṃ labhate paurvadehikam ।

Yatate ca tato bhūyaḥ saṃsiddhau kurunandana ॥6-43 ॥

अपने पुनर्जन्म में अपने पहले जन्म का बुद्धि-योग वह आगे ले जाता है। हे कुरुपुत्र, वह आत्मा अपनी साधना को सिद्धि के लिए चलाता रहता है।

There he gets the company and environment of intelligent and learned people, a gift of his past birth. Hey Kurunandana, he then, again and further tries on for success in yoga.

पूर्वाभ्यासेन तेनैव हियते ह्यवशोऽपि सः ।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ॥ ६-४४ ॥

*Pūrvābhyāsenā tenaiva hriyate hyavaśo'pi saḥ ।
Jijñāsuraṇi yogasya śabdabrahmātivartate ॥6-44 ॥*

पुर्वजन्म की साधना के कारण वह जिज्ञासु अपने मन को साधना में लगाता है और योग साधना को वैदिक मार्ग से आगे बढ़ाता है।

By the practice of his previous birth in continuation, he is spontaneously taken over. The man of faith and yogic ambition and effort achieves the success described in the Vedas.

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः ।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ॥ ६-४५ ॥

*Prayatnādīyatamānastu yogī saṃśuddhakilbiṣaḥ ।
Anekajanmasaṃsiddhastato yāti parāṃ gatim ॥6-45 ॥*

प्रयत्न करते करते योगी अपने आत्मा को शुद्ध करके, अनेक जन्मों के उपरांत परम सिद्धि को प्राप्त कर लेता है।

The man of constant practice, the yogi, over successive births, cleansed of weaknesses and negativities of sense, mind and intelligence, getting success over one after another janma, then, achieves the ultimate goal.

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः ।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ॥ ६-४६ ॥

*Tapasvibhyo'dhiko yogī jñānibhyo'pi mato'dhikaḥ ।
Karmibhyaścādhiko yogī tasmādyogī bhavārjuna ॥6-46 ॥*

योगी तपस्वियों से श्रेष्ठ है, ज्ञानियों से भी श्रेष्ठ माना गया है, और सकाम कर्मियों से भी श्रेष्ठ है। अतः हे अर्जुन, तुम योगी बनो।

The yogi is higher than the practitioner, man of tapas. The yogi is held higher than the man of knowledge. The yogi is higher than the man of Karma. Therefore, O Arjuna, be the yogi.

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना ।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥ ६-४७ ॥

Yogināmapī sarveṣāṃ madgatenāntarātmanā ।
Śraddhāvānbhajate yo māṃ sa me yuktatamo mataḥ ॥ 6-47 ॥

सब योगियों से भी वह सबसे सर्वश्रेष्ठ है वह जो अंतरात्मा से ब्रह्म प्राप्त हो गया है। जो श्रद्धा से ब्रह्म को भजता है, और ब्रह्म से जो एकात्म हो गया है। वह सबसे श्रेष्ठ है जो ब्रह्म युक्तात्मा है।

Of the yogis too, of all of them, the one who has come to me with heart and soul, who serves me in all faith, he is the closest to me.

CHAPTER-7

(ज्ञान विज्ञान)

श्रीभगवानुवाच ।

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।

असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥ ७-१ ॥

Śrībhagavān uvāca ।

Mayyāsaktamanāḥ pārtha yogaṃ yuñjanmadāśrayaḥ ।

Asaṁśayaṃ samagraṃ mām yathā jñāsyasi tacchṛṇu ॥ 7-1 ॥

भगवान् कृष्ण बोले:

ब्रह्म में मन को अर्पणा करके हे पार्थ, यदि कोई व्यक्ति साधना करता है, यदि कोई ब्रह्म के सहारे ध्यान करता है, यदि कोई संशय रहित सम्पूर्णता रूप में कोई मुझे जानना चाहता है, तो सुनो:

Shribhagawan Says:

Your mind wholly dedicated to me, constantly practicing yoga, wholly depending faithfully on me, the way you would know me without doubt, wholly, of that now you listen to me.

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ।

यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥ ७-२ ॥

Jñānaṃ te'haṃ savijñānamidaṃ vakṣyāmyaśeṣataḥ ।

Yajjñātvā neha bhūyo'nyajjñātavyamavaśiṣyate ॥ 7-2 ॥

तो मैं तुमसे ज्ञान और विज्ञान की बात बिना संकोच के करूंगा। उसको सुनके कुछ और सुनने के लिए नहीं बचेगा।

Of jnana, knowledge, along with vijnana, practical experience, I shall speak to you without leaving anything out. When you know that, then there will be nothing worth knowing anymore.

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।

यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ ७-३ ॥

Manuṣyāṇāṃ sahasreṣu kaścidyatati siddhaye ।

Yatatāmapī siddhānāṃ kaścīn māṃ veti tattvataḥ ॥ 7-3 ॥

हजारों मनुष्यों में कोई बिरला ही सिद्धि के लिए प्रयास करता है। उन प्रयास करने वाले सिद्धिप्रयास पुरुषों में कोई-कोई ही ब्रह्म को तत्त्व रूप में जानता है।

Among thousands of men, there is hardly a siddha, one who tries to know Me wholly and successfully. And among those siddhas too who try to know, there is hardly one who knows me in the essence.

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च ।

अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ ७-४ ॥

Bhūmirāpo 'nalo vāyuh kham mano buddhireva ca ।

Ahaṅkāra itīyaṃ me bhinnā prakṛtiraṣṭadhā ॥ 7-4 ॥

भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार यह आठ भिन्न प्रकार की प्रकृति है।

Earth, water, heat and light, wind energy, space, mana (mind), intelligence and ahamkara (definition), that is my well-defined eightfold Prakrti (Shakti).

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।

जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥ ७-५ ॥

Apareyamitastvanyāṃ prakṛtiṃ viddhi me parām ।

Jīvabhūtāṃ mahābāho yayedaṃ dhāryate jagat ॥ 7-5 ॥

इस आठ प्रकार की प्रकृति से परे एक पराप्रकृति और भी है। सो जीवरूप में है। उसीसे सारे जगत के प्राणी धारण किए जाते हैं।

This first order of prakrti is obvious (apara). Beyond this first order, there is a higher-order of Prakrti (para Prakrti) which has become the Jiva, which holds all the dynamic and moving forms. Know this, hero of mighty arm.

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय ।

अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥ ७-६ ॥

Etadyonīni bhūtāni sarvāṇītyupadhāraya ।

Ahaṃ kṛtsnasya jagataḥ prabhavaḥ pralayastathā ॥ 7-6 ॥

संसार के सारे प्राणी इन ही जीव योनियों में जन्म लेते हैं। केवल ब्रह्म से ही सारे प्राणियों का जन्म और संहार होता है।

All these forms of existence are the forms of Prakrti where-from they have their birth. I am the beginning and the end of the entire dynamic world of forms.

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय ।

मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥ ७-७ ॥

*Mattaḥ parataram nānyatkiñcidasti dhanañjaya ।
Mayi sarvamidam protam sūtre mañigaṇā iva ॥ 7-7 ॥*

हे धनन्जय, ब्रह्म से परे कुछ भी नहीं है। ब्रह्म में ही सब कुछ ओत प्रोत है, जैसे सूत्र (धागे) में मणियां ओत-प्रोत होती हैं।

O Dhananjaya, beyond me there is nothing else. Everything is connected and held by me just like the beads of a rosary are connected to and held by the thread.

*रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥ ७-८ ॥
Raso 'hamapsu kaunteya prabhāsmi śaśisūryayoḥ ।
Praṇavaḥ sarvavedeṣu śabdaḥ khe pauruṣam nṛṣu ॥ 7-8 ॥*

यहां से आगे कृष्ण ब्रह्म के रूप में बोलते हैं: वे कहते हैं कि मैं जलों में रस हं, सूर्य और चंद्र में प्रभा हं, सब वदो में ओम रूप में हं, आकाश में शब्द हं, पुरुषों पौरुष हं।

I am the living taste and flow in the liquids (waters), I am the light of the Sun and the moon, I am the Aum of all the mantras of the Vedas, I am shabda, sound, in space, and I am the manhood spirit of humanity in the humans.

*पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥ ७-९ ॥
Punyo gandhaḥ pṛthivyāṃ ca tejaścāsmi vibhāvasau ।
Jīvanam sarvabhūteṣu tapaścāsmi tapasviṣu ॥ 7-9 ॥*

पृथ्वी में पवित्र गन्ध हं। अग्नि में तेज हं, सब जीवों में जीवन हं, तपस्वियों में तप हं।

I am the holy fragrance of the Earth, the Heat and Light of Agni (fire), I am the life of all the forms and I am the tapas of the austere practitioners.

*बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥ ७-१० ॥
Bījam mām sarvabhūtānām viddhi pārtha sanātanam ।
Buddhirbuddhimatāmasmi tejastejasvināmaham ॥ 7-10 ॥*

पार्थ, सब जीवों में मैं सनातन बीज हं। बुद्धिमतों में मैं बुद्धि हूँ, तेजस्विओं में मैं तेज हं।

Know that I am the Eternal Seed of all forms of existence, O Partha. I am the intelligence of the intelligents, and I am Splendour of the brilliant.

बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।

धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥ ७-११ ॥

Balaṃ balavatāṃ cāhaṃ kāmarāgavivarjitam ।

Dharmāviruddho bhūteṣu kāmo'smi bharatarṣabha ॥ 7-11 ॥

हे भारत के वीर, मैं काम और राग के बिना बलवानों का बल हूँ। धर्म के अनुसार मैं सब प्राणियों में काम हूँ।

I am the strength of the strong but free from desire and attachment, and I am the excitement of erotics in keeping with, not contrary to, Dharma, O strongest of the Bharatas.

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये ।

मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥ ७-१२ ॥

Ye caiva sāttvikā bhāvā rājasāstāmasāśca ye ।

Matta eveti tānviddhi na tvahaṃ teṣu te mayi ॥ 7-12 ॥

जो सात्त्विक राजसिक और तामसिक भाव हैं, वे सब मुझसे ही हैं। किंतु मैं उन में नहीं हूँ, वे सब मुझमें हैं।

All the sattvic forms of light and intelligence, all the rajasic forms of energy and excitement, and all forms of matter and balancing brakes flow from me. And know that all of them are in me, not that I am limited within them.

त्रिभिर्गुणमयैर्भवैरेभिः सर्वमिदं जगत् ।

मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम् ॥ ७-१३ ॥

Tribhirguṇamayairbhāvairēbhiḥ sarvamidaṃ jagat ।

Mohitaṃ nābhijānāti māmebhyaḥ paramavyayam ॥ 7-13 ॥

इन तीनों गुणों से यह संसार मोहित है। यह नहीं जानता कि मैं अव्यय रूप से इन सबसे परे हूँ।

The entire world of existence is deluded by these three orders of Prakṛti, not knowing that I transcend all these and I am the Ultimate and the Infinite Imperishable beyond these.

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥ ७-१४ ॥

Daivī hyeṣā guṇamayī mama māyā duratyayā ।

Māmeva ye prapadyante māyāmetāṃ taranti te ॥ 7-14 ॥

यह सत्व, रजस्, तमस् गुण मयी माया बड़ी दुस्तर है। इसको पार करना बड़ा कठिन है। लेकिन जो ब्रह्म प्राप्त योगी हैं वे इस माया को तर जाते हैं।

All this world of existence is my modes of Maya, Shakti, divine, unconquerable. But those that come to me, they cross this Maya.

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः ।

माययापहतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥ ७-१५ ॥

Na mām duṣkṛtino mūḍhāḥ prapadyante narādhamāḥ ।

Māyayāpahṛtajñānā āsuram bhāvamāśritāḥ ॥ 7-15 ॥

जो दुष्कर्म करने वाले मूख और अधम लोग हैं, माया मोहित हैं, अज्ञात ग्रस्त हैं, आसुरी भावके हैं, व ब्रह्मको प्राप्त नहीं कर सकते।

The lowest of men, all deluded, men of evil, come not to me, their knowledge and awareness is taken away by Maya, they take to the mental state of negativity, nothing positive, nothing creative.

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।

आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥ ७-१६ ॥

Caturvidhā bhajante mām janāḥ sukṛtino'arjuna ।

Ārto jijñāsurarthārthī jñānī ca bharatarṣabha ॥ 7-16 ॥

अर्जुन, हे भरतवंशी वीर, जो सुकर्मी हैं, वे चार प्रकार के भक्त योगी मेरा (अर्थात् ब्रह्म का) ध्यान करते हैं। वे हैं दुःखो, जिज्ञासु, अर्थार्थी और ज्ञानी।

Arjuna, strong and positive men of good action come to me four ways: the helpless, the seeker, the materially motivated, and the man of knowledge, O strongest of the Bharatas.

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥ ७-१७ ॥

Teṣāṃ jñānī nityayukta ekabhaktirviśiṣyate ।

Priyo hi jñānino'tyarthamaḥ sa ca mama priyaḥ ॥ 7-17 ॥

उनमें केवल ज्ञानी ऐसा है जो सदा ब्रह्म से जुड़ा रहता है, उसकी भक्ति अटल है। वही मेरे लिए विशेष है। ज्ञानी ही मेरा अत्यंत प्रिय है, और मैं भी उसका प्रिय हूँ।

Of these, the man of knowledge, concentrated the only one divine way, is the best, because he loves me only without any other motive. I am the dearest to him and he is the dearest to me.

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।

आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् ॥ ७-१८ ॥

*Udārāḥ sarva evaite jñānī tvātmaiva me matam ।
Āsthitaḥ sa hi yuktātmā māmevānuttamāḥ gatim ॥ 7-18 ॥*

यह चारों ही उदार हैं, किंतु ज्ञानी तो मेरा ही आत्मा है, मैं ऐसा मानता हूँ। ज्ञानी भक्ति में स्थित है सदा मुझसे जुड़ा है मानो मैं ही उसकी उत्तम गति हूँ। मुझ से बड़ी और कोई गति नहीं है।

They are all noble hearted, but to me the jnani, he that knows me, is my very self. He is firm, concentrated on me, the best way he can be, my own.

*बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥ ७-१९ ॥
Bahūnāḥ janmanāmante jñānavānmāḥ prapadyate ।
Vāsudevaḥ sarvamiti sa mahātmā sudurlabhaḥ ॥ 7-19 ॥*

कई जन्मों के पश्चात् ज्ञानी मुझ तक पहुंचता है। ऐसा महात्मा दुर्लभ है जो सारे संसार को ब्रह्म का स्वरूप समझता है।

And the jnani too comes to me at the end of many births. The man who really knows that all the world of existence is Vasudeva, the Spirit Divine, such a man is indeed rare.

*कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥ ७-२० ॥
Kāmaistaistairhṛtajñānāḥ prapadyante'nyadevatāḥ ।
Taṁ taṁ niyamamāsthāya prakṛtyā niyatāḥ svayā ॥ 7-20 ॥*

तरह तरह के काम और इच्छाओं से जिनके ज्ञान का हरण हो गया है, वे ब्रह्म के अतिरिक्त अनेक देवताओं की आराधना करते हैं, इन देवताओं का चयन वे अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार करते हैं। य उनके अपने नियम है।

People whose knowledge is lost in desire feel attached to other ideals. They are determined in character by their own nature, and follow the rules of their own nature.

*यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥ ७-२१ ॥
Yo yo yāṁ yāṁ tanuḥ bhaktaḥ śraddhayārcitumicchati ।
Tasya tasyācalāḥ śraddhāḥ tāmeva vidadhāmyaham ॥ 7-21 ॥*

जिस किसी देवता का चयन कोई भक्त अपनी श्रद्धा के अनुसार करता है, उसकी श्रद्धा भक्तिको मैं उसी व्यक्तिगत रूप में स्वीकार-स्थिर कर देता हूँ।

Thus whoever the bhakta, devotee, who serves and dedicates to whichever form of divinity he loves with firm faith, I accept the same and reward that very firm faith of the devotee.

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हे तान् ॥ ७-२२ ॥

*Sa tayā śraddhayā yuktastasyārāadhanamīhate ।
Labhate ca tataḥ kāmānmayaiiva vihitānhi tān ॥ 7-22 ॥*

वह व्यक्ति उसी व्यक्तिगत श्रद्धा के साथ अपने चयनकृत देवता की आराधना करता है। फिर वह भक्त निज भक्ति के कारण फल प्राप्त करता है। यह व्यवस्था भी मैं ही करता हं।

Whoever is attached with faith to whatever form of divinity, and the same he serves, he is rewarded the same way according to the order as determined by me.

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥ ७-२३ ॥

*Antavattu phalaṃ teṣāṃ tadbhavatyalpamedhasām ।
Devāndevayajo yānti madbhaktā yānti māmapi ॥ 7-23 ॥*

उन भक्तों को अपना भक्ति के अनुसार जो फल मिलता है, उसका तो अंत शीघ्रता से हो जाता है। जो भक्त देवताओं की आराधना करता है, उसके अनुसार उनको फल मिलता है, जो मेरे भक्त हं वे मुझसे मिलते हैं।

Of course, the reward of such devoties, unintelligent as they are, is limited. Those who serve other ideals get success therein, but those dedicated to me come to me.

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥ ७-२४ ॥

*Avyaktaṃ vyaktimāpannaṃ manyante māmabuddhayaḥ ।
Paraṃ bhāvamajānanto māmāvyayamanuttamam ॥ 7-24 ॥*

मैं अव्यक्त हं। भोले लोग समझते हैं कि मैं एक व्यक्ति के रूप में जन्म लेकर केवल एक व्यक्ति बन गया हं। मैं परम् मानव रूप में ही हं, अव्यय हं। एकरस रहता हं, मैं उत्तम हं मुझसे बड़ा कुछ नहीं है। भोले लोग मेरे परम भाव को नहीं जानते।

Men of little intelligence do not know that I am beyond form and definition. They feel that I have taken a fixed and definite form. They do not know that I am the Ultimate Reality, imperishable, best and highest beyond measure.

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।

मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥ ७-२५ ॥

Nāhaṃ prakāśaḥ sarvasya yogamāyāsamāvṛtaḥ ।

Mūḍho 'yaṃ nābhijānāti loko māmajamavyayam ॥ 7-25 ॥

मैं सब प्रकाश रूप में नहीं आता। अपने योग माया से छिपा हूं। भोले लोग मुझ नहीं जानते मैं अजन्मा हूं और मैं अपरिवर्तन हूं।

I am not revealed to or experienced by all, veiled as I am by my yogamaya, Shakti. I am Unborn, Imperishable, Eternal. Unintelligent, deluded, these people do not know this.

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।

भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥ ७-२६ ॥

Vedāhaṃ samatītāni vartamānāni cārjuna ।

Bhaviṣyāṇi ca bhūtāni mām tu veda na kaścana ॥ 7-26 ॥

मैं बीती बातें जानता हूं, अर्जुन, वर्तमान और भविष्य के प्राणियों को जानता हूं, किंतु मुझ कोई नहीं जानता।

Arjuna, I know all the past, all the present, and all the future forms of existence. Me, no one knows.

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत ।

सर्वभूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप ॥ ७-२७ ॥

Icchādvēṣasamutthena dvandvamohena bhārata ।

Sarvabhūtāni sammohaṃ sarge yānti parantapa ॥ 7-27 ॥

हे भरतवंशी, हे परन्तप, इच्छा और द्वेष से जन्में और बढ़ते सुख-दुःख की दुरंगी चाल से सब मोहित, सब प्राणी संसार में जन्म लेते हैं, हे परम तपस्वी।

O Bharata, O Paramtapa, all forms of existence are afflicted by the rise of duality and desire, love and hate. They suffer from delusion in the world of creation.

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।

ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥ ७-२८ ॥

Yeṣāṃ tvantagataṃ pāpaṃ janānāṃ puṇyakarmaṇām ।

Te dvandvamohanirmuktā bhajante mām dṛḍhavrataḥ ॥ 7-28 ॥

जिन सुकर्मी आत्माओं के पाप का अंत हो जाता है वे दुरंगी चाल क मोह से मुक्त होकर और दृढ़ व्रत धारण करके मेरा भजन करते हैं।

All those whose negativities have ended, who do good action, and who are free from duality and delusion, who are dedicated firmly to me, all these serve me only.

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।

ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥ ७-२९ ॥

Jarāmaraṇamokṣāya māmāśritya yatanti ye ।

Te brahma tadviduḥ kṛtsnamadhyātmaṃ karma cākhilam ॥ 7-29 ॥

य पुण्यकर्मी आत्माएं जरा बुढ़ापा और मरण से मुक्ति के लिए मेरा आराधन करके साधना करते हैं। वे परमब्रह्म को जानते हैं वह संपूर्ण अध्यात्मिक कर्म को जानते हैं। वे इस प्रकार अपना कर्म करते हैं।

Those who are dedicated to me, who depend on me alone, who try for freedom from the cycle of birth and death, they alone know That Brahma and the Spirit in entirety, and they know the complete cosmic karma.

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः ।

प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥ ७-३० ॥

Sādhibhūtādhidaivaṃ māṃ sādhiyajñaṃ ca ye viduḥ ।

Prayāṇakāle'pi ca māṃ te viduryuktacetasaḥ ॥ 7-30 ॥

अधिभूत अधिदैव अधियज्ञ कर्म को जो प्राणी भली प्रकार जानते हैं वे शरीर छोड़ने की अवस्था में भी मुझे से जुड़े रहते हैं और उसी आत्म अवस्था में शरीर छोड़ते हैं।

Those who by the time of death know me, dedicated as they are in mind and spirit, and know me along with adhibhuta, adhidaiva and adhiyajna, get free from the cycle of birth and death.

CHAPTER-8

(अक्षर ब्रह्म)

अर्जुन उवाच ।

किं तद् ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम ।

अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते ॥ ८-१ ॥

Arjuna uvāca ।

Kim tad brahma kimadhyātmaṃ kiṃ karma puruṣottama ।

Adhibhūtaṃ ca kiṃ proktamadhidaivaṃ kimucyate ॥ 8-1 ॥

अर्जुन ने पूछा:

वह ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? हे पुरुषोत्तम, कर्म क्या है? अधिभूत क्या है? अधिदैव किसको कहा गया है?

Says Arjuna:

Purushottama, what is That Brahma? What is Adhyatma? What is Karma? What is Adhibhuta said to be? What is Adhidaiva said to be?

अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन ।

प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ॥ ८-२ ॥

Adhiyajñāḥ katham ko'tra dehe'sminmadhusūdana ।

Prayāṇakāle ca katham jñeyo'si niyatātmabhiḥ ॥ 8-2 ॥

हे मधुसूदन, इस संसार रूपी देह में अधियज्ञ कौन और कैसे है? और अंत काल में जो आप से जुड़े हैं व आपको कैसे जान?

Who and how, in this body, is Adhiyajna,

Madhusudana? How, at the time of leaving the body, are you to be known by those whose mind and spirit is controlled and dedicated?

श्रीभगवानुवाच ।

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ।

भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥ ८-३ ॥

Śrībhagavānuvāca ।

Akṣaraṃ brahma paramaṃ svabhāvo'dhyātmamucyate ।

Bhūtabhāvodbhavadakaro visargaḥ karmasamjñītaḥ // 8-3 //

श्री भगवान् ने उत्तर दिया:

अक्षर ब्रह्म ब्रह्म है, स्वभाव अध्यात्म कहा जाता है। तथा सृष्टि में जो भी रूपादि रचित है, उसकी रचना का नाम कर्म है।

Shree Bhagawan says:

Akshara Brahma, the Infinite Imperishable Spirit is Param Brahma, the Ultimate Consciousness. The defined consciousness, whether individual or cosmic, 'I am', that is called Adhyatma. The creative impulse, of power and process, cosmic creative evolution, is known as Karma.

अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ।

अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ॥ ८-४ ॥

Adhibhūtaṃ kṣaro bhāvaḥ puruṣaścādhidaivatam ।

Adhiyajño 'hamevātra dehe dehabhṛtām vara // 8-4 //

सृष्टि में जो कुछ घटता बढ़ता है, बनता बिगड़ता है जीता है, मरता है, वह अधिभूत है, प्रकृति का खल है, (पुरुष ही अधिदैव है) हे देह धारियों में श्रेष्ठ अर्जुन, मं ही (अथवा ईश्वर ही) इस सृष्टि का अधियज्ञ हं।

The mutable Prakṛti is Adhibhuta. Puruṣa, the cosmic form of all physical forms taken together is Adhidaivatam. And here, I am the Adhiyajnah in the cosmic body of all forms of life, the best. (cf. 3,5)

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।

यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥ ८-५ ॥

Antakāle ca māmeva smaranmuktva kalevaram ।

Yaḥ prayāti sa madbhāvaṃ yāti nāstyatra saṃśayaḥ // 8-5 //

अंतकाल में जो मुझे स्मरण करता हुआ शरीर छोड़ता है। वह मेरे भाव को (अर्थात् ईश्वर भाव को) प्राप्त होता है। इसमें कोई संशय नहीं है।

At the time of the last breath of life, the person who leaves the body, remembering Me only, he for sure comes to me, to my nature and character. No doubt about that.

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।

तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावं भावितः ॥ ८-६ ॥

Yaṃ yaṃ vāpi smaranbhāvaṃ tyajatyante kalevaram ।

Taṃ tamevaiti kaunteya sadā tadbhāvabhāvitaḥ // 8-6 //

या जिस किसी भाव को स्मरण करता हुआ कोई मनुष्य शरीर को छोड़ता है, हे कौन्तेय, वह सदा उसी भाव को प्राप्त होता है।

Or, O Kaunteya, whatever the nature and character of their self when they leave the body, the same is the nature and character they go to, because that is the state of life they are in at that time. This is always true.

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामिवैश्वस्यसंशयः ॥ ८-७ ॥

*Tasmātsarveṣu kāleṣu māmanusmara yudhya ca ।
Mayyarpitamano buddhirmāmevaiśvasyasaṁśayaḥ ॥ 8-7 ॥*

इसीलिए हर समय केवल मेरा ही ध्यान करो और युद्ध भी करो। मन और बुद्धि को मुझे अर्पण करके मुझे ही प्राप्त करोगे, इसमें कोई संदेह नहीं।

Therefore at all times remember Me and do your karma, and fight too. Your mind and intelligence (awareness) given up (dedicated) to Me, you will come to Me for sure. No doubt here.

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना ।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ॥ ८-८ ॥

*Abhyāsayogayuktena cetasā nānyagāminā ।
Paramaṁ puruṣaṁ divyaṁ yāti pārthānucintayan ॥ 8-8 ॥*

मन, बुद्धि और चित्तको मुझ से जोड़कर, किसी और से नहीं, मेरा ध्यान करता हुआ, जब कोई व्यक्ति शरीर छोड़ता है ता, हे पार्थ, परम दिव्य पुरुष को (अर्थात् ईश्वर को) ही प्राप्त होता है।

With your mind and consciousness dedicated to me with constant practice (abhyasa) and yoga, Partha, a person goes to the Ultimate Divine Purusha, thinking of Me alone, nothing else other than Divinity.

कविं पुराणमनुशासितार-मणोरणीयंसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ८-९ ॥

*Kaviṁ purāṇamanuśāsītāraṁ-aṅoraṇīyaṁsamanusmaredyaḥ ।
Sarvasya dhātāramacintyarūpa-mādityavarṇaṁ tamasaḥ parastāt ॥ 8-9 ॥*

जो मनुष्य कवि अर्थात् क्रांतदर्शी, पुराना अर्थात् सदैव वर्तमान सारे जगत का अनुशासन करने वाले, छोटे से छोटे सूक्ष्म अति सूक्ष्म और महतो महान् का ध्यान करता है, सारे जगत को धारण करने वाला, अचिन्त्य रूप, आदित्य वर्ण और तमस् के पार प्रभु का ध्यान कर..

The person who remembers the Ultimate Purusha, creator, poet of the Veda, eternal ruler and ordainer, smaller than the smallest, controller and lawgiver of all, beyond thought, glorious as the Cosmic Sun, beyond eternal darkness, he goes to the Ultimate Purusha Divine.

प्रयाणकाले मनसाऽचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव ।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥ ८-१० ॥

*Prayāṅakāle manasā'calena bhaktyā yukto yogabalena caiva / Bhruvormadhye
prāṇamāveśya samyak sa taṁ paraṁ puruṣamupaiti divyam // 8-10 //*

और जो मनुष्य अचल मन से, भक्ति पूर्वक, योगबल से शरीर छोड़ते समय, उस प्रभु का ध्यान करते हैं। भ्रुवों के मध्य में संपूर्ण चेतना को केंद्रित करके परम देव का ध्यान करते हैं, वे उस परम दिव्य पुरुष को प्राप्त करते हैं, अवश्यमेव, निस्संदेह।

The person at the time of death, with fixed mind without disturbance, with Bhakti, all consciousness dedicated to Him with the power of yoga, with eye-light in the center of the brows, all his energy concentrated thereon, he goes to the Divine Purusha, the Ultimate Reality.

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः ।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥ ८-११ ॥

*Yadakṣaraṁ vedavido vadanti viśanti yadyatayo vītarāgāḥ /
Yadicchanto brahmacaryaṁ caranti tatte padaṁ saṅgrahaṇa pravakṣye // 8-11 //*

जिस अक्षर ब्रह्म की चर्चा वेद के विद्वान करते हैं, जिस को वीतराग यति प्राप्त होते हैं, जिसकी इच्छा काल कर भक्त वृंद ब्रह्मचर्य का व्रत पालन करते हैं, मैं उस परम पद को चर्चा तुमसे संपूर्ण रूप से किंतु संक्षेप से करूंगा।

I shall now speak to you, briefly but comprehensively, of Akshara Brahma, the Ultimate Reality: knowers of the Veda speak of That, men of discipline free from attachment join that Presence, men with love and dedication observe the discipline of Brahmacharya to realise That.

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च ।
मूर्ध्नाधायाम्नः प्राणमास्थितो योगधारणाम् ॥ ८-१२ ॥

*Sarvadvārāṇi saṁyamya mano hr̥di nirudhya ca /
Mūrdhnyādhāyātmanah prāṇamāsthito yogadhāraṇām // 8-12 //*

इंद्रियों के सब बहिर मुखो द्वारों को रोककर, मन को हृदय में निरोध पूर्वक स्थिर करके, आत्म चेतना को मस्तिष्क में धारण करके, योग साधना करना चाहिये।

Having closed all outgoing senses and mind, having focussed the mind in the heart, concentrating the entire energy of the self on top of the head, sitting, all attention self concentrated in the state of yoga....

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ ८-१३ ॥

*Omityekākṣaram brahma vyāharanmāmanusmaran ।
Yah prayāti tyajandeham sa yāti paramām gatim ॥ 8-13 ॥*

ओम अक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ, मेरा (अर्थात् ईश्वर का) ध्यान करता हुआ जो मनुष्य शरीर छोड़ता है, वह अवश्यमेव परम पुरुष परमात्मा को प्राप्त होता है।

Chanting Aum, remembering Me, as Eternal Brahma, whoever leaves the body, he attains to the highest state of Being.

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ॥ ८-१४ ॥

*Ananyacetāḥ satataṃ yo mām smarati nityaśaḥ ।
Tasyāham sulabhaḥ pārtha nityayuktasya yoginaḥ ॥ 8-14 ॥*

सम्पूर्ण रूप से जो मनुष्य नित्य प्रतिदिन मेरा (ईश्वर का) ध्यान करता है, वह योगी सदैव मेरा ध्यान करने के कारण मुझे आसानी से प्राप्त कर लेता है।

Whosoever remembers me with single mind constantly for all time, for him, for the sole concentrative yogi, Partha, I am always there ever present and ready to receive.

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् ।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ॥ ८-१५ ॥

*Māmupetya punarjanma duḥkhālayamaśāśvatam ।
Nāpnuvanti mahātmānaḥ saṃsiddhiṃ paramām gatāḥ ॥ 8-15 ॥*

पुनर्जन्म दुःख का घर है, क्षणिक है। मुझे प्राप्त हो के भक्तों का पुनर्जन्म नहीं होता। देवात्मा का परम सिद्धि के पश्चात् पुनर्जन्म नहीं होता।

Men of great atman, having attained to the ultimate state in Me, they do not come back to birth again, which is a temporary sojourn in the state of sufferance.

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥ ८-१६ ॥

*Ābrahmabhuvanāllokāḥ punarāvartino'rjuna ।
Māmupetya tu kaunteya punarjanma na vidyate ॥ 8-16 ॥*

अर्जुन, ब्रह्मलोक तक सारे लोक ऐसे हैं कि उनसे पुनर्जन्म के कारण वापस आना पड़ता है। लेकिन मुझे प्राप्त करने के पश्चात् पुनर्जन्म नहीं होता।

Arjuna, all lokas this side of Brahma-loka are repetitive again and again. So having attained to Me in the Brahma-loka, O son of Kunti, return and rebirth does not take place.

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्षद् ब्रह्मणो विदुः ।

रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥ ८-१७ ॥

Sahasrayugaparyantamaharyad brahmaṇo viduḥ ।

Rātriṃ yugasahasrāntāṃ te'horātravido janāḥ ॥ 8-17 ॥

एक हजार चतुर्युगी का ब्रह्मा का एक दिन होता है, इसको विद्वान जानते हैं। एक हजार चतुर्युगी की ब्रह्मा की रात्रि भी होती है। इस प्रकार दो सहस्र चतुर्युगी का एक अहोरात्र बनता है। इसको भी विद्वान जानते हैं।

One thousand great ages (chatur yugis), the men of knowledge call and know as Brahma's day. Another one thousand ages they know are the night of Brahma's life. Together, both day and night, are known as one 'ahoratra'.

अव्यक्ताद् व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे ।

रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥ ८-१८ ॥

Avyaktād vyaktayah sarvāḥ prabhavantyaharāgame ।

Rātryāgame pralīyante tatraivāvyaktasamjñake ॥ 8-18 ॥

ब्रह्मा के दिन के प्रारंभ में जो सृष्टि के अंग प्रत्यंग अव्यक्त अवस्था में सोये पड़े होते हैं वे जाग उठते हैं और अव्यक्त अवस्था से व्यक्त अवस्था में परिवर्तित हो जाते हैं। रात्रि के आ जाने पर वे वापस अव्यक्त अवस्था में चले जाते हैं।

(एक चतुर्युगी 43,20,000 वर्ष की होती है। इसमें कलियुग 4,32,000 वर्ष का होता है। द्वापर 8,64,000 वर्ष का होता है। त्रेता 12,96,000 का होता है। और सतयुग 1,78,000 वर्ष का होता है। इन चारों युगों का जोड़ 43,20,000 होता है। इसको 1000 से गुणा करो तो सृष्टि की आयु आ जायेगी जो ब्रह्मा का एक दिन होता है। फिर एक सहस्र वर्ष की रात्रि होती है। दो सहस्रा चतुर्युगी के पश्चात् फिर सृष्टि का प्रारम्भ होता है। सृष्टि सम्बन्धो यह विषय सूर्य सिद्धान्त, मनुस्मृति, ओर सत्यार्य प्रकाश समुल्लास-8 में भी मिल जायेगा।

From Avyakta, absolute state of Prakrti, the defined species of existence come into being at the beginning of the day. At the coming of the night, they enter into the same state of the Absolute. (Both day and night are one ahoratra cycle.)

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥ ८-१९ ॥

*Bhūtagrāmaḥ sa evāyaṁ bhūtvā bhūtvā pralīyate ।
Rātryāgame 'vaśaḥ pārtha prabhavatyaharāgame ॥ 8-19 ॥*

इस प्रकार यह सृष्टि, ये सारी योनियां बार-बार बनती और प्रलय को प्राप्त होती रहती हैं। सृष्टि का दिन आने पर सृष्टि प्रारंभ होती है और रात आने पर सृष्टि समाप्त हो जाती है।

This world of existential forms, O Partha, again and again, manifests at the morning of the day, and, again and again, goes out of existence at the coming of the night, by sheer force of Cosmic Law.

परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः ।
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥ ८-२० ॥

*Parastasmāttu bhāvo'nyo'vyakto'vyaktātsanātanaḥ ।
Yaḥ sa sarveṣu bhūteṣu naśyatsu na vinaśyati ॥ 8-20 ॥*

व्यक्त और अव्यक्त से पर एक सनातन भाव है। और भी जो आने जाने वाले भावों से परे हैं। जो कभी नष्ट नहीं होता।

Beyond that manifest and unmanifest, there is another Unmanifest Reality, which is Eternal, the One that does not perish while all others perish.

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम् ।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ ८-२१ ॥

*Avyakto 'kṣara ityuktastamāhuḥ paramāṁ gatim ।
Yaṁ prāpya na nivartante taddhāma paramaṁ mama ॥ 8-21 ॥*

व्यक्त और अव्यक्त से परे एक भाव सनातन है। सनातन ब्रह्म ही परम गति है। उसे प्राप्त होकर आत्मा वापस पुनर्जन्म में नहीं आता। अर्जुन वही मेरा (अर्थात् परम ब्रह्म का) धाम है।

Unmanifest, undefined, imperishable, that is called the Ultimate State of Being. Having reached there, no one comes back and the same is my Ultimate and Absolute Being.

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ॥ ८-२२ ॥

*Puruṣaḥ sa paraḥ pārtha bhaktyā labhyastvananyayā ।
Yasyāntaḥsthānī bhūtānī yēna sarvamidaṁ tataṁ ॥ 8-22 ॥*

Yasyāntaḥsthāni bhūtāni yena sarvamiḍaṃ tatam ॥ 8-22 ॥

हे पार्थ, वह सनातन ही परम पुरुष है। वह अनन्य भक्ति से प्राप्त होता है। सभी सृष्टि प्राणी उसी परम ब्रह्म के अंदर स्थित हैं। यह सृष्टि के बल उसी परम ब्रह्म में व्याप्त हैं वही सर्वव्यापक है।

That Purusha, Partha, is the Ultimate, realisable through constant exclusive devotion.
The entire world of existence is in That and That creates and That pervades all this.

यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः ।

प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ ॥ ८-२३ ॥

Yatra kāle tvanāvṛttimāvṛttiṃ caiva yoginaḥ ।

Prayātā yānti taṃ kālaṃ vakṣyāmi bharatarṣabha ॥ 8-23 ॥

हे भारतवंशी धीर, जिस काल में योगी जन आवृत्ति या अनावृत्त को प्राप्त होते हैं। अर्थात् जिस काल में कोई योगी पुनर्जन्म के साथ वापस इस संसार में आता है, या पुनर्जन्म न होने के कारण वापस नहीं आता, जाने वाला जाता है परंतु आता नहीं, मैं उस काल का विवरण करूंगा, तुमको बताऊंगा।

I shall speak to you, O best of the Bharatas, of the times of yogi's return or non-return, when, going from life, they return, and when, while departing, they don't return.

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।

तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥ ८-२४ ॥

Agnirjyotirahaḥ śuklaḥ ṣaṇmāsā uttarāyaṇam ।

Tatra prayātā gacchanti brahma brahmavido janāḥ ॥ 8-24 ॥

वर्ष के छः महीने उत्तरायण पक्ष के होते हैं। उस समय सूर्य भूमध्य रेखा से उत्तर दिशा में रहता है। उसका देवता अग्नि होता है और वह शुक्ल पक्ष कहलाता है। उत्तरायण में जाने वाले योगी जो ब्राह्मण के उपासक हैं, व वापस नहीं आते। उत्तरायण के छः महीने सूर्य के दिन कहलाते हैं।

Fire, light, the bright half of the moon, the six-month Uttarayana phase of the Earth in relation to the Sun, when the presiding deities of these guide the path of the departing soul, then the jiva, departing, knowing Brahma and the Veda, reaches the Divine state of Brahma, the Absolute.

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।

तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते ॥ ८-२५ ॥

Dhūmo rātristathā kṛṣṇaḥ ṣaṇmāsā dakṣiṇāyanam ।

Tatra cāndramasaṃ jyotiryogī prāpya nivartate ॥ 8-25 ॥

धूमिल रात्रि है, सूर्य का कृष्ण पक्ष है, सूर्य भूमध्य रेखा से दक्षिण में है। ये छः महीने दक्षिणायन कहलाते हैं। चंद्रमा देवता है। इन छः महीनों में जाने वाला योगी परलोक में जाता है, वह लौटकर वापस आता है, उसका पुनर्जन्म होता है।

When smoke, night, the dark fortnight, the six-month Dakshinayana phase of the Earth in relation to the Sun, then the jiva departing, in the light of the moon, reaching the moonlight, the yogi returns.

शुक्लकृष्णे गती होते जगतः शाश्वते मते ।

एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः ॥ ८-२६ ॥

Śuklakṛṣṇe gatī hyete jagataḥ śāśvate mate ।

Ekayā yātyanāvṛttimanyayāvartate punaḥ ॥ 8-26 ॥

शुक्ल और कृष्ण, ये इस प्राणी जगत के दो मार्ग हैं, यह सदा सृष्टिमान् माना गया है। एक से जाकर लौटते नहीं दूसरे से जाकर लौटना पड़ता है।

Light and dark, these two are believed to be the universal paths of the departing soul. One leads to the state of non-return, the other leads to the return.

नैते सूती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन ।

तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन ॥ ८-२७ ॥

Naite sṛtī pārtha jānanyogī muhyati kaścana ।

Tasmātsarveṣu kāleṣu yogayukto bhavāṛjuna ॥ 8-27 ॥

ये इस जगत से जाने के दो मार्ग हैं, इनको जानकर योगी मोह ग्रस्त नहीं होता। हे अर्जुन, काल कोई भी हो सर्व काल में तुम योगी बने रहो।

Knowing these two paths, Partha, the yogi does not suffer from delusion. Hence, Arjuna, in all times, always be dedicated to yoga.

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम् ।

अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥ ८-२८ ॥

Vedeṣu yajñeṣu tapaḥsu caiva dāneṣu yatpuṇyaphalaṃ pradiṣṭam ।

Atyeti tatsarvamidaṃ veditvā yogī paraṃ sthānamupaiti cādyam ॥ 8-28 ॥

वेद के पठन-पाठन अथवा यज्ञ तप से दान इत्यादि कर्म से जो फलपूर्ण रूप से प्राप्त होता है, कहा गया है योगी उसी सभी को पार कर जाता है और उसको प्राप्त करके परम स्थान की प्राप्ति कर लेता है।

Whatever auspicious reward in relation to (following from) Veda, yajna, tapas, charities, is ordained, knowing all that, and knowing and crossing all that hence, the yogi attains the eternal and ultimate state of being.

CHAPTER-9

राज विद्याराज-गुह्य

श्रीभगवानुवाच ।

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे ।

ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ ९-१ ॥

Śrībhagavān uvāca ।

Idaṃ tu te guhyatamaṃ pravakṣyāmyanasūyave ।

Jñānaṃ vijñānasahitaṃ yajjñātvā mokṣyase'subhāt ॥ 9-1 ॥

श्री भगवान् ने कहा:

हे अर्जुन, तुम निर्दोष हो, निष्पाप हो। मैं तुम्हारे लिए विज्ञान सहित ज्ञान की यह शिक्षा दंगा, जिससे तुम अशुभ कर्म और शुभ दोनों से बच जाओगे।

Says Shri Bhagawan:

And now I shall speak to you, free from sin as you are, of jnana (knowledge) along with vijnana, the way of realizing it, so that, having known that, you will be free from evil. Most secret and profound it is.

राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् ।

प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ॥ ९-२ ॥

Rājavidyā rājaguhyaṃ pavitramidamuttamam ।

Pratyakṣāvagamaṃ dharmyaṃ susukhaṃ kartumavyayam ॥ 9-2 ॥

वह ज्ञान राजविद्या है, महानतम है, पवित्रतम है, गुप्तधन है, इसका फल प्रत्यक्ष है, धर्मयुक्त है, करने में सुगम है, और अविनाशी है।

That is the highest knowledge, most secret and profound, sacred it is, the best, practically knowable, understandable, dharmic, pleasurable, pursuable, imperishable.

अश्रद्धधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप ।

अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ९-३ ॥

Aśraddadhānāḥ puruṣā dharmasyāsya parantapa ।

Aprāpya māṃ nivartante mṛtyusaṃsāravartmani ॥ 9-3 ॥

हे परम तपस्वी अर्जुन, श्रद्धाहीन मुझको नहीं पा सकते, वे इस धर्म को भी नहीं पा सकते। वह संसार में बार-बार जन्म लेकर क्षणभंगुर जीवन में भटकते रहते हैं।

Men who lack shraddha in this Dharma, O paramtapa, having lost Me, come and go, over the paths of this world of mortality.

मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना ।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥ ९-४ ॥

*Mayā tatamidam sarvaṃ jagadavyaktamūrtinā ।
Matsthāni sarvabhūtāni na cāhaṃ teṣvavasthitāḥ ॥ 9-4 ॥*

मैं निराकार हूँ। यह सारा जगत मुझसे व्याप्त है। यह सब सजीव रूप तुझ में है मगर मैं इनमें नहीं हूँ।
This entire world is pervaded by me of no form, Nirakara I am. All forms of existence are in me, but I'm not confined within them.

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् ।
भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥ ९-५ ॥

*Na ca matsthāni bhūtāni paśya me yogamaiśvaram ।
Bhūtabhṛnna ca bhūtaśtho mamātmā bhūtabhāvanaḥ ॥ 9-5 ॥*

सारे जीव प्राणी मुझ पर आश्रित हैं, पर वह आप कर्म करते हैं, यह मेरा योगबल है। मैं एकरस और निर्लिप्त रहता हूँ। मैं प्राणियों को जीवन देता हूँ। मेरा आत्मा सृष्टि करता है, मैं सृष्टि को चलाता हूँ, पर सब प्राणो और सब मनुष्य अपना कर्म करते हैं, अर्थात् मं प्राणियों में हूँ भी और नहीं भी।

The different forms of life exist in me but they do not materially or spacially define me. Look, that is my wondrous power and potential. I am the sustainer of life forms, yet the life-forms do not sustain me, they do not define me, they only reflect me.

यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् ।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥ ९-६ ॥

*Yathākāśasthito nityaṃ vāyuḥ sarvatrago mahān ।
Tathā sarvāṇi bhūtāni matsthānītyupadhāraya ॥ 9-6 ॥*

जैसे वायु आकाश में सब स्थानों में चलता है, पर किसी को विकारी नहीं करता, इसी रूप में मैं सब प्राणियों को किसी विकार में नहीं लाता। यह समझ।

Just as the grand Universal Vayu energy exists in all space (akasha), so do all forms of the world exist in me, they reflect, but they do not define me. Know this for sure.

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् ।
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ॥ ९-७ ॥

*Sarvabhūtāni kaunteya prakṛtiṃ yānti māmikām ।
Kalpakṣaye punastāni kalpādau visṛjāmyaham ॥ 9-7 ॥*

हे कौन्तेय, प्राकृति मेरी शक्ति है, सभी प्राणी प्रकृति के अनुसार चलते हैं, कल्प के आदि में उनका सर्जन होता है, और कल्प के अंत में प्रकृति उनको समेट लेती है।

Kaunteya, at the end of the existential phase, all forms of existence go back into my Prakrti, and in the beginning of the next phase, I release them to create.

प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥ ९-८ ॥

Prakṛtiṃ svāmavaṣṭabhya visṛjāmi punaḥ punaḥ ।
Bhūtagrāmamimaṃ kṛtsnamavaśaṃ prakṛtervaśāt ॥ 9-8 ॥

अपनी शक्ति, प्रकृति, को व्याप्त होकर मैं बार-बार सृष्टि रचता हूँ, और प्रकृति के नियम के अनुसार इस सारी सृष्टि को समेट लेता हूँ।

Taking over, and manifesting my Prakrti, I release this entire panorama of existential forms, subject to the laws of Prakrti, again and again.

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय ।
उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥ ९-९ ॥

Na ca māṃ tāni karmāṇi nibadhnanti dhanañjaya ।
Udāsīnavadāsīnamasaktaṃ teṣu karmasu ॥ 9-9 ॥

हे धनञ्जय, इन सृष्टि कार्यों का मेरे लिए कोई बंधन नहीं है, मैं उदासीन की तरह बिना आसक्ति के इन सृष्टि कर्मों को करता हूँ।

O Dhananjaya, those creative karmas do not bind me. I exist in all those creative karmas like a person indifferent, unattached and uninvolved.

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥ ९-१० ॥

Mayādhyakṣeṇa prakṛtiḥ sūyate sacarācaram ।
Hetunānena kaunteya jagadviparivartate ॥ 9-10 ॥

मैं केवल प्रकृति का अध्यक्ष हूँ। प्रकृति ही चर अचर सृष्टि का सर्जन करती है। हे कौन्तेय, इसी कारण से प्राकृतिक जगत में सब परिवर्तन होते हैं।

By the reason of my presiding presence, Prakrti creates all forms of moving and non-moving creatures. Kaunteya, this is the reason why this dynamic world moves and moves on.

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥ ९-११ ॥

Avajānanti māṃ mūḍhā mānuṣīṃ tanumāśritam ।
Paraṃ bhāvamajānanto mama bhūtamahēśvaram ॥ 9-11 ॥

अविद्वान लोग मुझे मानव रूप में साधारण मनुष्य समझते हैं। व मेरे परम भाव को नहीं जानते। मैं वास्तव में सब प्राणियों के लिए महेश्वररूप में हूँ।

Ignorant people out of delusion little know me, feeling that I have taken a human body. They do not know my Ultimate Reality of existence, the highest Lord of the forms of existence.

मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः ।

राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः ॥ ९-१२ ॥

Moghāśā moghakarmāṇo moghajñānā vicetasah ।

Rākṣasīmāsurīm caiva prakṛtiṃ mohinīm śritāḥ ॥ 9-12 ॥

राक्षसी, असुरी और मोहिनी प्रकृति का सहारा लेकर ऐसे व्यक्ति व्यर्थ की आशा, व्यर्थ कर्म, व्यर्थ ज्ञान लिए, विकारी चित्त वाले मुझ ऐसा समझते हैं।

Men of vain hopes, fruitless karma, little knowledge and uncertain mind take to forms of demonic and evil but tempting nature and character, seductive and misleading.

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः ।

भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ॥ ९-१३ ॥

Mahātmānastu mām pārtha daivīm prakṛtimāśritāḥ ।

Bhajantyananyamanaso jñātvā bhūtādimavyayam ॥ 9-13 ॥

किंतु महान आत्मा, विद्वान, दैवी प्रकृति का सहारा लेकर मुझे आदि प्राणियों का सर्जनहार अविनाशी परम भाव समझते हैं और अनन्य मन से मेरा ध्यान करते हैं।

But men of noble soul take to my Divine Nature and character, and Partha, they dedicate to serve me, first, universal, eternal and imperishable Lord, they do so with a single and united mind.

सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः ।

नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते ॥ ९-१४ ॥

Satataṃ kīrtayanto mām yatantaśca dṛḍhavratāḥ ।

Namasyantaśca mām bhaktyā nityayuktā upāstate ॥ 9-14 ॥

ऐसे महात्मा, मेरा कीर्तन करते हैं, दृढ़व्रती होकर साधना करते हैं, भक्ति के साथ मेरे लिए नमन करते हैं, और सदा ध्यान पूर्वक मेरी उपासना करते हैं।

Men of continuous and constant honor, inviolable discipline and relentless practice, always dedicated, serve Me, dedicate to Me and bow to Me.

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते ।
एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ॥ ९-१५ ॥

*Jñānayajñena cāpyanye yajanto māmupāsate ।
Ekatvena pṛthaktvena bahudhā viśvatomukham ॥ 9-15 ॥*

कुछ और महात्मा ज्ञान यज्ञ से मेरी उपासना करते हैं, वे मुझे विराट रूप समझ कर अपने ही तरीके से केवल मेरी ही उपासना करते हैं।

Others dedicate to me, serve me, lord of universal vision, with the yajna of knowledge, with single mind and exclusive devotion, in many ways, as one, as many and distant and by yajna.

अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहममौषधम् ।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥ ९-१६ ॥

*Ahaṃ kraturahaṃ yajñaḥ svadhāhamamauśadham ।
Mantra 'hamahamevājyamahamagnirahaṃ hutam ॥ 9-16 ॥*

मैं बुद्धि रूप पूजा हूँ, यज्ञ हूँ, औषधि हूँ, मंत्र हूँ, धृति हूँ, अग्नि हूँ, मैं ही आहुति हूँ।

I am the yajna karma, the yajna karta, I am the yajna, I am the offering, I am the holy material, I am the mantra, I am the ghrta offering. I am the fire, I am the offered samagri.

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः ।
वेद्यं पवित्रमोङ्कार ऋक्साम यजुरेव च ॥ ९-१७ ॥

*Pitāhamasya jagato mātā dhātā pitāmahaḥ ।
Vedyam pavitramoṅkāra ṛksāma yajureva ca ॥ 9-17 ॥*

मैं जगत का पिता हूँ, माता हूँ, धारण कता हूँ, पितामह हूँ, जानने योग्य पवित्र ओम् हूँ, ऋग्वेद हूँ, यजुर्वेद हूँ।

I am the father creator of this dynamic world, I am the mother, I am the law and the law giver, I am the grand old father, I am the subject content of knowledge, I am the sacred Omkara, I am the Rk, I am the Sama, I am the Yajus.

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् ।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम् ॥ ९-१८ ॥

*Gatirbhartā prabhuḥ sākṣī nivāsaḥ śaraṇaṃ suhṛt ।
Prabhavaḥ pralayaḥ sthānaṃ nidhānaṃ bījamavyayam ॥ 9-18 ॥*

मैं परमगति हूँ, भरण पोषण कर्ता हूँ, प्रभु हूँ, जगत का निवास हूँ, सर्व शरण हूँ, सब का मित्र हूँ। मैं ही संसार का आदि और अन्त हूँ, मं स्थान हूँ, निधान हूँ, अविनाशी बीज हूँ।

I am the Movement, the Sustainer, Master, Witness, the home, the shelter Haven, the friend at heart. I am the beginning and the end; I am the place and the resting home. And I am the eternal imperishable seed of existence.

तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च ।
अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ॥ ९-१९॥

*Tapāmyahamaham varṣam nigrhṇāmyutsrjāmi ca ।
Amṛtaṁ caiva mṛtyuśca sadasaccāhamarjuna ॥ 9-19 ॥*

मैं ही तप करता हूँ, मैं वर्षा हूँ, मैं ही ग्रहण करता हूँ, छोड़ता भी मैं ही हूँ, मैं अमृत हूँ, मृत्यु हूँ, हे अर्जुन, मैं ही सत् और असत् हूँ।

I am the burning Sun, I am the raining cloud that holds, and releases. I am immortality and I am death. Arjun, I am truth and I am falsehood, reality and non-reality both.

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गातिं प्रार्थयन्ते ।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोक-मश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान् ॥ ९-२०॥

*Traividya māṁ somapāḥ pūtapāpā yajñairiṣṭvā svargatiṁ prārthayante ।
Te puṇyamāsādyā surendraloka-maśnanti divyāndivi devabhogān ॥ 9-20 ॥*

स्तुति, प्रार्थना, उपासना करने वाले, सोम पीने वाले, परम पवित्र भक्त यज्ञ करके स्वर्ग की प्रार्थना करते हैं। वे पुण्य प्राप्त करके इन्द्रलोक में दिव्य भोगों का आनन्द लेते हैं।

Lovers of Soma, immaculate of sin, dedicated to three-fold knowledge of Rk, Sama and Yaju (stuti, prarthana, upasana) pray to me with yajnas for the paradisaal state. They, having gained the regions of the gods and virtue, enjoy the celestial pleasures in the regions of the devas.

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते ॥ ९-२१॥

*Te taṁ bhuktvā svargalokaṁ viśālaṁ kṣīṇe puṇye martyalokaṁ viśanti ।
Evaṁ trayīdharmamanuprapannā gatāgataṁ kāmakāmā labhante ॥ 9-21 ॥*

वे विशाल स्वर्गलोक का आनन्द लेने वाले पुण्य समाप्त होने पर वापस संसार में आते हैं। इस प्रकार व सकाम कर्मों, स्वर्ग और संसार में आते जाते अपना जीवन बिताते हैं।

Having enjoyed the paradisaal pleasures of high order, when their karmic virtue is exhausted, they come back to the martyaloka of mortality. Thus having love for the

fruits of the threefold karma, they get back to the cycle of birth and death.

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ ९-२२ ॥

*Ananyāścintayanto mām ye janāḥ paryupāsate ।
Teṣāṃ nityābhiyuktānām yogakṣemaṃ vahāmyaham ॥ 9-22 ॥*

इस प्रकार जो भक्त अनन्य भाव से मेरा चिन्तन करते हैं, मैं ही उनके योग और क्षेम को वहन करता हूँ। योग का अर्थ है: भगवान से जुडना, क्षेम का अर्थ है: सुखशान्ति।

Those who meditate on me alone and worship me and me alone and constantly, their yoga and kshema, their gain and security, I look after and carry through.

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ॥ ९-२३ ॥

*Ye 'pyanyadevatā bhaktā yajante śraddhayānvitāḥ ।
Te 'pi māmēva kaunteya yajantyaavidhipūrvakam ॥ 9-23 ॥*

जो भक्त, श्रद्धा पूर्वक दूसरे देवताओं की पूजा करते हैं, वे भी मेरी ही पूजा करते हैं, लेकिन उनकी पूजा अविधिपूर्वक होती है।

Whoever others, dedicated with faith, worship and serve other devas, they too, O Kaunteya, worship me only, they do so but not in the right way.

अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते ॥ ९-२४ ॥

*Ahaṃ hi sarvayajñānāṃ bhoktā ca prabhureva ca ।
Na tu māmabhijānanti tattvenātaśchyavanti te ॥ 9-24 ॥*

मैं ही सब यज्ञों का भोक्ता हूँ और मैं ही उनका स्वामी हूँ। इसी कारण वे अन्य देव पुजारी वापस इस संसार में आते हैं।

Indeed, I am the master and I am the receiver of all yajnas and acts of worship. But people in general, do not know me in the essence. Therefore they miss the mark and fail to hold on. They fall back to the world of mortality.

यान्ति देवव्रता देवान्पितृन्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ॥ ९-२५ ॥

*Yānti devavratā devānpitṛnyānti pitṛvratāḥ ।
Bhūtāni yānti bhūtejyā yānti madyājino'pi mām ॥ 9-25 ॥*

देव पूजक देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितृ पूजक पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतपूजक भूतों को प्राप्त होते हैं, मेरा भजन करने वाले मुझको प्राप्त होते हैं।

The worshippers of devas go to the devas, the worshippers, devotees, of pitris, ancestors, please the ancestors. Those, who serve other forms of life, please and achieve these other forms. But those who worship and serve me, come to me.

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्रामि प्रयतात्मनः ॥ ९-२६ ॥

*Patraṃ puṣpaṃ phalaṃ toyam yo me bhaktyā prayacchati ।
Tadaham bhaktyupahr̥tamaśnāmi prayatātmanaḥ ॥ 9-26 ॥*

जो मुझ पत्र, पुष्प, फल, जल भक्तिपूर्वक अर्पण करते हैं, मैं उन भक्तों की भेंट को प्रेम से स्वीकार करता हूँ।

Whoever offers a leaf, a flower, a fruit or water to me with faith and love, that I receive as given to me with love and faith at heart.

यत्करोषि यदश्रासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥ ९-२७ ॥

*Yatkaroshi yadaśnāsi yajjuhoṣi dadāsi yat ।
Yattapasyasi kaunteya tatkuruṣva madarpaṇam ॥ 9-27 ॥*

हे कौन्तेय, तुम जो करते हो, खाते हो, यज्ञ में अर्पण करते हो, जो तप करते हो, वह सब मुझे अर्पण कर दो।

Kaunteya, whatever you do, what you eat, what you offer in yajna, what you give, whatever you do by way of tapas and austerity, O Kaunteya, offer that all to me.

शुभाशुभफलैरेवं मोक्षसे कर्मबन्धनैः ।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि ॥ ९-२८ ॥

*Śubhāśubhaphalairēvaṃ mokṣase karmabandhanaiḥ ।
Saṃnyāsayogayuktātmā vimukto māmupaiṣyasi ॥ 9-28 ॥*

तुम इस प्रकार कर्म करके शुभ और अशुभ फल के कर्मबन्ध से छूट जाओगे। इस प्रकार कर्मफल की चिंता से मुक्त मेरी ही शरण में आ जाओगे।

Whatever the fruit of your karma, good or bad, if you offer it to me, you will be free of the consequences. One who is a man of sanyasa, indifference, to the fruit, and bound by the yoga of love and divine dedication, he is free and comes to me.

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः ।

ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥ ९-२९ ॥

Samo 'ham sarvabhūteṣu na me dveṣyo'sti na priyaḥ ।

Ye bhajanti tu mām bhaktyā mayi te teṣu cāpyaham ॥ 9-29 ॥

मैं सब प्राणियों में समभाव से व्याप्त हूँ। मेरा कोई प्यारा नहीं, न मेरा किसी से द्वेष है। जो मुझे भक्तिपूर्वक प्रेम करता है, मैं उसमें व्याप्त हूँ। वह मुझमें है।

I am equanimous (equal minded) to all beyond hate and love. No one for me is an object of love or of hate. All those who serve me with devotion are with me and I am with them.

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।

साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥ ९-३० ॥

Api cetsudurācāro bhajate māmananyabhāk ।

Sādhureva sa mantavyaḥ samyagvyavasito hi saḥ ॥ 9-30 ॥

यदि कोई दुराचारी है, पर अनन्य मन से मेरा ध्यान करता है, मैं उसको साधु ही समझता हूँ, और वह भी समझता है कि मैं भगवान के साथ हूँ।

And if a man be of evil disposition, but if he is dedicated to me with a single mind, he is to be accepted as good, because he is rightly settled in equanimity.

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति ।

कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥ ९-३१ ॥

Kṣipram bhavati dharmātmā śaśvacchāntiṃ nigacchati ।

Kaunteya pratijānīhi na me bhaktaḥ praṇaśyati ॥ 9-31 ॥

ऐसा व्यक्ति शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाता है, सहज परम शान्ति का प्राप्त करता है। हे कौन्तेय, निश्चयपूर्वक यह जानले कि मेरे भक्त का कभी विनाश नहीं होता।

A man becomes good in no time, comes to all peace through dedication. Kaunteya, know it for certain that a person devoted to me never goes off, never comes to naught.

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।

स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥ ९-३२ ॥

Mām hi pārtha vyapāśritya ye'pi syuḥ pāpayonayaḥ ।

Striyo vaiśyāstathā śūdrāste'pi yānti parāṃ gatim ॥ 9-32 ॥

हे पार्थ, चाहे कितना ही पापी हो, मेरा विश्वास करके चाहे कोई स्त्री हो, वैश्य हो, शूद्र हो, सब परम गति को प्राप्त होते हैं।

Having resort to me with heart and soul, even those who otherwise have been or are evil, whether they are men or women, Vaishya or Shudra, whatever their sex or profession, they achieve the highest state of being.

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा ।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् ॥ ९-३३ ॥

Kim punarbrāhmaṇāḥ puṇyā bhaktā rājarṣayastathā ।
Anityamasukhaṃ lokamimaṃ prāpya bhajasva mām ॥ 9-33 ॥

कोई पुण्यात्मा ब्राह्मण हो, पुण्यात्मा भक्त हो, राजर्षि हा, कोई चिन्ता नहीं, इस आनित्य असुखी लोक में जन्म पा कर मेरा ही भजन कर।

How much more is it true of people dedicated to Brahma and Veda, or the devoted saints or the Rshis engaged in social good. Having got to this human state of mortality, void of peace and happiness, always remember: dedicate and serve me.

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्तवैवमात्मानं मत्परायणः ॥ ९-३४ ॥

Manmanā bhava madbhakto madyājī māṃ namaskuru ।
Māmevaiṣyasi yuktvaivamātmānaṃ matparāyaṇaḥ ॥ 9-34 ॥

अनन्य मन से मेरा भजन कर, मेरा भक्त बन, मेरा भजन कर, मुझे नमन कर, मन से, आत्मा से, मेरा हो जाओ, मुझे ही प्राप्त हो जाओगे।

Dedicate yourself to me, with mind, heart and soul, be my devotee, serve me, bow to me in reverence. Being such, heart and soul with me, given up entirely to me, you will come to me.

CHAPTER-10

(विभूति योग)

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥ १०-१ ॥

*Bhūya eva mahābāho śṛṇu me paramaṃ vacaḥ ।
Yatte 'haṃ prīyamāṇāya vakṣyāmi hitakāmyayā ॥ 10-1 ॥*

हे महाबाहु, अब मेरे परम शब्दों को सुनो। तुम मेरे प्रिय हो, श्रद्धावान हा तुम्हारे हित की कामना के लिए ये शब्द कह रहा हूँ।

And now again, hey Mahabahu, listen to me for the highest word of teaching, which I shall speak to you for your good, for you are so dear to me.

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥ १०-२ ॥

*Na me viduḥ suragaṇāḥ prabhavaṃ na maharṣayaḥ ।
Ahamādirhi devānāṃ maharṣīṇāṃ ca sarvaśaḥ ॥ 10-2 ॥*

मेरे अनादि अनंत रूप के विषय में देवता या महर्षि नहीं जानते। मैं देवों का और महर्षियों का आदि कारण हूँ।

The divines do not know me, nor do the sages, they do not know my power or origination of manifestation. I am the origination of all the devas and of the maharshis, in every way.

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १०-३ ॥

*Yo māmajamanādiṃ ca veti lokamaheśvaram ।
Asammūḍhaḥ sa martyeṣu sarvapāpaiḥ pramucyate ॥ 10-3 ॥*

जो मेरे महेश्वर रूप को अजन्मा, अनादि जानता है, वही विद्वान है, और वह समस्त पाप से मुक्त हो जाता है।

Whoever knows me, eternal and unborn, Lord of all the people and of all the worlds, free from delusion he is, and among all the mortals, he becomes free from all sin and weakness.

बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥ १०-४ ॥

*Buddhirjñānamasammohaḥ kṣamā satyaṃ damaḥ śamaḥ ।
Sukhaṃ duḥkhaṃ bhavo 'bhavo bhayaṃ cābhayameva ca ॥ 10-4 ॥*

Sukham duḥkham bhavo'bhāvo bhayaṃ cābhayameva ca ॥ 10-4 ॥

बुद्धि, ज्ञान, असम्मोह, क्षमा, सत्य, शम, दम, सुख-दुःख, भाव, अभाव, भय, अभय.....

Intelligence, knowledge, freedom from illusion, forgiveness, truth, self control, peace of mind, pleasure and pain, being and non-being, fear and freedom from fear....

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥ १०-५॥

Ahimsā samatā tuṣṭistapo dānaṃ yaśo'yaśaḥ ।

Bhavanti bhāvā bhūtānāṃ matta eva pṛthagvidhāḥ ॥ 10-5 ॥

अहिंसा, समता, तुष्टि, तप, दान, यश, अयश, ये सब प्राणियों के भाव मुझसे ही प्रकाशित होते हैं। ये सब पृथक हैं।

Non-violence, equanimity, satisfaction with life, tapas austerity, charity, honor and dishonor, all these virtues or vices, feelings, states and attitudes of any form of life, arise and originate from me, each one different and existent.

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा ।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥ १०-६॥

Maharṣayaḥ sapta pūrve catvāro manavastathā ।

Madbhāvā mānasā jātā yeṣāṃ loka imāḥ prajāḥ ॥ 10-6 ॥

सारे सप्तऋषि, चारों मनु, सारा मानव समाज जिनका परिवार है, ये सब मेरे ही मन के भाव से ही जन्मा है।

Seven early Rishis, four Manus are all my own reflections born of the mind, of which these forms of existence are the descendent evolutes.

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः ।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥ १०-७॥

Etāṃ vibhūtiṃ yogam ca mama yo vetti tattvataḥ ।

So 'vikampena yogena yujyate nātra saṃśayaḥ ॥ 10-7 ॥

मेरी इस शक्ति और योग को जो व्यक्ति तत्व से जानता है वह निश्चय भक्ति योग से जुड़ जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

All this power, potential and grandeur of mine, whoever knows in the essence, he is blessed with undisturbed constant yoga, that is, association with me. No doubt about it here.

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥ १०-८ ॥

*Ahaṁ sarvasya prabhavo mattaḥ sarvaṁ pravartate ।
Iti matvā bhajante mām budhā bhāvasamanvitāḥ ॥ 10-8 ॥*

मैं सारे जगत का जन्मदाता हूँ। यही जानकर सारे भाव प्रेरित होते हैं और आगे बढ़ते हैं। विद्वान इसी भाव को जानते हैं।

I am the origin and origination of all and everything. All and everything arises from me. Knowing this, the wise, blest with faith and feeling of devotion, dedicate to me and inspired to feel and serve me.

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥ १०-९ ॥

*Maccittā madgataprāṇā bodhayantaḥ parasparam ।
Kathayantaśca mām nityaṁ tuṣyanti ca ramanti ca ॥ 10-9 ॥*

मुझसे जो मन लगाते हैं, मुझसे जो अनुपाणित होते हैं। मुझे जानकर जो परस्पर बोध को प्राप्त होते हैं, और मेरी कथा करते रहते हैं, जो नित्य प्रसन्न होते हैं, और कथा में रमण करते हैं...

Men with dedicated mind and all pranic energy centred on me, knowing me together and speaking and celebrating me, always please me and enjoy with me.

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥ १०-१० ॥

*Teṣāṁ satatayuktānāṁ bhajatāṁ prītipūrvakam ।
Dadāmi buddhiyogaṁ taṁ yena māmupayānti te ॥ 10-10 ॥*

ऐसे जो व्यक्ति मुझसे जुड़े रहते हैं, प्रीति पूर्वक मेरी कथा करते हैं, मैं उनको देव बुद्धि, योग ध्यान प्रदान करता हूँ, वे सदा मेरे साथ वास करते हैं।

Those who constantly join and serve me with love and dedication, I bless with Buddhi-yoga of the kind I have described, by which they come to me.

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥ १०-११ ॥

*Teṣāmevānukampārthamahamajñānajaṁ tamaḥ ।
Nāśayāmyātmabhāvastho jñānadīpena bhāsvatā ॥ 10-11 ॥*

मैं उन भक्तों पर अनुग्रह करके उनके अज्ञान के कारण अंधेरे को दूर कर देता हूँ, और ब्रह्मभाव रूप ज्ञानदीप से प्रकाशित कर देता हूँ।

As a blessing of compassion for their dedication, I, one with their atma, remove the darkness born of their ignorance, and I give them the light of knowledge.

अर्जुन उवाच ।

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् ।

पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् ॥ १०-१२ ॥

Arjuna uvāca ।

Paraṁ brahma paraṁ dhāma pavitraṁ paramaṁ bhavān ।

Puruṣaṁ śāśvataṁ divyamādidevamajaṁ vibhum ॥ 10-12 ॥

अर्जुन बोले,

हे परमब्रह्म, परमधाम परमपवित्र, हे अमर पुरुष, दिव्य देव, हे अजन्मा, हे सर्वव्यापी, हे अजन्मा देव....

Says Arjuna:

Ultimate Brahma, supreme haven, most sacred and pure, Eternal Purusha, divine, Eternal Lord of the universe, unborn and infinite.

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा ।

असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥ १०-१३ ॥

Āhustvāmṛṣayaḥ sarve devarṣirnāradastathā ।

Asito devalo vyāsaḥ svayaṁ caiva bravīṣi me ॥ 10-13 ॥

सब ऋषि, सब देवर्षि नारद आसित, देवल व्यास और आप भी स्वयम् अपने आपको ऐसा ही कहते हैं।

All the sages celebrate you, Devarshi Narada, Asita, Devala, Vyasa, and you as you describe yourself to me, all celebrate.

सर्वमेतद्वदन् मन्ये यन्मां वदसि केशव ।

न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥ १०-१४ ॥

Sarvametaḍṛtaṁ manye yanmāṁ vadasi keśava ।

Na hi te bhagavanvyaktiṁ vidurdevā na dānavāḥ ॥ 10-14 ॥

हे केशव, आपके विषय में ये जो भी कहते हैं, मैं वह सत्य मानता हूँ। जो आप मुझको कहते हैं। हे भगवन् आपको को व्यक्ति रूप में ना देव जानते ना दानव जानते।

All this I accept as true, Keshava, as you too speak of yourself to me. Still, O Lord of power and glory, neither the devas nor the demons know of you as a person manifest.

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।

भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥ १०-१५ ॥

Svayamevātmanātmānaṁ vettha tvaṁ puruṣottama ।

Bhūtabhāvana bhūteśa devadeva jagatpate ॥ 10-15 ॥

हे पुरुषोत्तम, केवल आप स्वयम् को जानते हैं, जैसा अपने विषय में कहते हैं, हे संसार सर्जन हार, हे प्राणि-राज, देव देव, हे जगत्पति...

O greatest of men, you know yourself by yourself, creator of all forms of existence, lord of all forms of creation, lord of devas, father creator and sustainer of the world.

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।

याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि ॥ १०-१६ ॥

Vaktumarhasyaśeṣeṇa divyā hyātmavibhūtayaḥ ।

Yābhirvibhūtibhirlokānimāṃstvaṃ vyāpya tiṣṭhasi ॥ 10-16 ॥

आपही अपनी दिव्य विभूतियों का वर्णन कर सकते हैं। जिनसे विभूषित आप स्वयम् संसार को व्याप्त करके स्थित हैं।

You alone can describe without exception your own powers and glories of manifestation, by which powers and glories you pervade and self-abide in all these worlds.

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् ।

केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया ॥ १०-१७ ॥

Katham vidyāmaham yogiṃstvāṃ sadā paricintayan ।

Keṣu keṣu ca bhāveṣu cintyo'si bhagavanmayā ॥ 10-17 ॥

हे परम योगी, मैं कैसे आपका ध्यान करने वाला, आपकी विभूतियों को कैसे जानूं! मैं किन किन भावों में आपका ध्यान करूं।

Thinking of you always, hey yogin of high order, how do I know you? Bhagawan, in which forms of being and manifestation can you be thought of by me in meditation?

विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन ।

भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् ॥ १०-१८ ॥

Vistareṇātmano yogam vibhūtiṃ ca janārdana ।

Bhūyaḥ kathaya tṛptirhi śṛṇvato nāsti me'mṛtam ॥ 10-18 ॥

हे योगी, हे जनार्दन, आप स्वयम् अपने योग विभूतियों का वर्णन कीजिये। हे अमृतयोगी, आप स्वयम् अपनी विभूतियों का वर्णन करें। सुनते सुनते मेरी तृप्ति नहीं हो रही।

Say again, I pray, in detail, your own innate power and glory, Janardana, in your own immortal words. As I hear, there is no end to my desire to hear.

श्रीभगवानुवाच ।

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।

प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥ १०-१९ ॥

Śrībhagavānuvāca ।

Hanta te kathayisyāmi divyā hyātmavibhūtayāḥ ।

Prādhānyataḥ kuruśreṣṭha nāstyanto vistarasya me ॥ 10-19 ॥

श्री भगवान ने कहा:

हे कुरुश्रेष्ठ, मैं स्वयम् अपनी विभूतियों का दिव्य एवं संपूर्ण वर्णन करूंगा। वास्तव में मेरी दिव्य विभूतियों का कोई अंत नहीं।

Says Shri Bhagawan:

O best of the Kurus, all right, I shall describe to you my divine manifestations of power and presence in the main because, otherwise, there is no end to my expressive manifestations.

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।

अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥ १०-२० ॥

Ahamātmā guḍākeśa sarvabhūtāśayasthitaḥ ।

Ahamādiśca madhyaṃ ca bhūtānāmanta eva ca ॥ 10-20 ॥

हे गुडाकेश, मैं सब प्राणियों के हृदय में व्याप्त दिव्य आत्मा हूँ। मैं ही सब प्राणियों का आदि, मध्य और अन्त हूँ।

Arjuna, Gudakesha, I am the Atma at heart present in the center-core of all forms of existence, I am the beginning, the middle and the end of all the forms of existence.

आदित्यानामहं विष्णुज्योतिषां रविरंशुमान् ।

मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥ १०-२१ ॥

Ādityānāmahaṃ viṣṇurjyotiṣāṃ raviraṃśumān ।

Marīcirmarutāmasmi nakṣatrāṇāmahaṃ śaśī ॥ 10-21 ॥

मैं आदित्यों में विष्णु हूँ, ज्योतियों में मैं ज्योतिष्मान् सूर्य हूँ। मरुतों में मैं मरीचि हूँ। नक्षत्रों में मैं चंद्रमा हूँ।

Of the Adityas, I am Vishnu; of the lights of the universe, I am the radiant Sun; of the maruts, I am Marichi; of the nakshatras, I am chandrama (moon).

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः ।

इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ॥ १०-२२ ॥

Vedānāṃ sāmavedo'smi devānāmasmi vāsavaḥ ।

Indriyāṅāṃ manaścāsmi bhūtānāmasmi cetanā ॥ 10-22 ॥

मैं वेदों में सामवेद हूँ। देवों में इंद्र हूँ। इंद्रियों में मन हूँ। प्राणियों में मैं चेतना हूँ।

Of the Vedas, I am Samaveda; of the devas, I am Indra. Of the Indriyas, I am manas (mind); and of the forms of life, I am consciousness.

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।

वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥ १०-२३ ॥

Rudrāṅāṃ śaṅkaraścāsmi vittiśo yakṣarakṣasām ।

Vasūnāṃ pāvakaścāsmi meruḥ śikhariṇāmaham ॥ 10-23 ॥

मैं रुद्रों में शंकर हूँ। यक्ष रूप राक्षसों में मैं कुबेर हूँ। वसुओं में अग्नि हूँ। शिखरों में मेरू हूँ।

Of the Rudras, I am Shankara; of the yakshas and rakshasas, I am Kuvera; of the Vasus, I am agni (fire); and of the mountains, I am Meru.

पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ।

सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ॥ १०-२४ ॥

Purodhasāṃ ca mukhyaṃ māṃ viddhi pārtha bṛhaspatim ।

Senānīnāmahaṃ skandaḥ sarasāmasmi sāgaraḥ ॥ 10-24 ॥

हे पार्थ, मैं पुरोहितों में मुख्य रूप से बृहस्पति हूँ। सेनापतियों में स्कन्द हूँ, सागरों में समुद्र हूँ।

Of the Purohitas, know me as the chief, Brhaspati; of the army commanders, I am Skanda; and of the seas, I am the ocean.

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्येकमक्षरम् ।

यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥ १०-२५ ॥

Maharṣīṅāṃ bhṛgurahaṃ girāmasmyekamakṣaram ।

Yajñānāṃ japayajño'smi sthāvarāṅāṃ himālayaḥ ॥ 10-25 ॥

मैं महर्षियों में भृगु हूँ। भाषाओं में एकाक्षर ओ३म् हूँ। यज्ञों में मैं जप-यज्ञ हूँ, स्थावरों में हिमालय हूँ।

Of the great Rishis, I am Bhrigu; of Words, I am the One Aum; of yajnas, I am Japayajna; and of the immovables, I am Himalaya.

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।

गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥ १०-२६ ॥

Aśvatthaḥ sarvavrakṣāṅāṃ devarṣīṅāṃ ca nāradaḥ ।

Gandharvāṅāṃ citrarathaḥ siddhānāṃ kapilo munih ॥ 10-26 ॥

वृक्षों में मैं अश्वत्थ (पीपल) हूँ। देवर्षियों में नारद हूँ। गन्धार्वों में मैं चित्ररथ हूँ, सिद्धों में कपिल मुनि हूँ।

Of all the trees, I am Ashwattha; and of devarshis, I am Narada; of the gandharvas, I am Chitraratha; of the siddhas, I am Kapila Muni.

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥ १०-२७ ॥

*Uccaiḥśravasamaśvānāṃ viddhi māmamṛtodbhavam ।
Airāvataṃ gajendrāṇāṃ narāṇāṃ ca narādhipam ॥ 10-27 ॥*

अश्वों में उच्चः श्रवस अमृत पुत्र हूँ, गजेन्द्रों में मैं ऐरावत हूँ। मनुष्यों में मैं नराधि पति राजा हूँ।
Of the horses, know me as Uccaishravas, born of amrita; of the elephants, I am Airawata; and of men, I am the Ruler.

आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक ।
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः ॥ १०-२८ ॥

*Āyudhānāmahaṃ vajraṃ dhenūnāmasmi kāmadhuk ।
Prajanaścāsmi kandarpaḥ sarpāṇāmasmi vāsukiḥ ॥ 10-28 ॥*

आयुधों में मैं वज्र हूँ, धनुवों में कामधेनु हूँ। कामक्रिया में पजनन हूँ। सर्पों में वासुकि हूँ।
Of the shastras (arms), I Am Vajra; of cows, I am Kamadhenu; of desire, I am procreative kama; and of the serpents, I am Vasuki.

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम् ।
पितृणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ॥ १०-२९ ॥

*Anantaścāsmi nāgānāṃ varuṇo yādasāmaham ।
Pitrṅnāmaryamā cāsmi yamaḥ saṃyamatāmaham ॥ 10-29 ॥*

नागों में अनन्त हूँ, जलचरों में बरुण हूँ। पितरों में अयंमा हूँ, शासकों में यम हूँ।
Of the nagas, I am Ananta; of the water dwellers, I am Varuna; of the Pitris, I am Aryama; and of law keepers, I am Yama.

प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम् ।
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥ १०-३० ॥

*Prahlādaścāsmi daityānāṃ kālah kalayatāmaham ।
Mṛgāṇāṃ ca mṛgendro'haṃ vainateyaśca pakṣiṇām ॥ 10-30 ॥*

दैत्यों में प्रह्लाद हूँ, समय गणना में काल हूँ, मृगों में मैं सिंह हूँ, पक्षियों में गरुड़ हूँ।

Of the Daityas, I am Prahlada; of the time keepers, I am Kala (time, death); of the Beasts, I am Mrigendra, king of beasts (lion); of the birds, I am Garuda.

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी ॥ १०-३१ ॥

Pavanaḥ pavatāmasmi rāmaḥ śastrabhṛtāmaham ।
Jhaṣāṇāṃ makaraścāsmi srotasāmasmi jāhnavī ॥ 10-31 ॥

पवित्र करने वालों में पवन हूँ। शस्त्रधारियों में राम हूँ, मछलियों में मकर हूँ, नदियों में गंगा हूँ।
Of the purifiers, I am the wind; of the wielders of the bow, I am Rama; of the fishes, I am alligator (the whale); of the rivers, I am the Ganga.

सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन ।
अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥ १०-३२ ॥
Sargāṇāmādirantaśca madhyaṃ caivāhamarjuna ।
Adhyātmavidyā vidyānāṃ vādaḥ pravadatāmaham ॥ 10-32 ॥

हे अर्जुन, सृष्टियों में आदि, मध्य, और अंत हूँ। विद्याओं में अध्यात्म विद्या हूँ, विवाद करने वालों में वाद हूँ।

Of the ages of creation, I am the beginning, the middle and the end, Arjuna; of the branches of knowledge, I am the knowledge of the Atman; and of the debaters, I am logic.

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च ।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ॥ १०-३३ ॥
Akṣarāṇāmakāro 'smi dvandvaḥ sāmāsikasya ca ।
Ahamevākṣayaḥ kālo dhātāhaṃ viśvatomukhaḥ ॥ 10-33 ॥

अक्षरों में अकार हूँ, समासों में द्वंद्व हूँ। मैं अक्षय काल हूँ, सर्व व्याप्त धारण करने वाला धाता हूँ।
Of the phonemes, I am 'A'; of compounds I am dwandva (dual); I am Time, the imperishable, and I am the law and the lawmaker with the universal eye.

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ॥ १०-३४ ॥
Mṛtyuḥ sarvaharaścāhamudbhavaśca bhaviṣyatām ।
Kīrtiḥ śrīrvākca nārīṇāṃ smṛtirmedhā dhṛtiḥ kṣamā ॥ 10-34 ॥

सब हरण करने वाला में मैं मृत्यु हूँ। नारियों में कीर्ति, श्री, वाक्, स्मृति, मेधा, धैर्य और क्षमा हूँ।

I am Death that consumes all, and I am the Birth of all who are to come in the future. I am the honour, grace and word of the women, their memory, wisdom, fortitude and forgiveness.

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥ १०-३५ ॥

Brhatsāma tathā sāmṇāṃ gāyatrī chandasāmaham ।
Māsānāṃ mārgaśīrṣo'hamṛtūnāṃ kusumākaraḥ ॥ 10-35 ॥

सामों में बृहत्साम हूँ, छंदों में गायत्री छंद हूँ। मासों में मार्गशीर्ष हूँ, ऋतुओं में वसंत हूँ।
Of the Samans, I am Brhatsama; of the Vedic chhandas, I am Gayatri; of months of the year, I am Margashirsha; and of the seasons of the year, I am the Spring.

द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् ॥ १०-३६ ॥

Dyūtaṃ chalayatāmasmi tejastejasvināmaham ।
Jayo 'smi vyavasāyo'smi sattvaṃ sattvavatāmaham ॥ 10-36 ॥

छलियों में द्यूत हूँ। तेजस्वियों का तेज हूँ। जीतने वालों में विजय हूँ। सत्ववालों का सत्वगुण हूँ।
Of the deceivers, I am the gamble; I am the splendor of the Splendid; and I am the Victory, effort and truth of the men of honest action of the Reals I am Satoguna.

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः ।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥ १०-३७ ॥

Vṛṣṇīnāṃ vāsudevo'smi pāṇḍavānāṃ dhanañjayaḥ ।
Munīnāmapyahaṃ vyāsaḥ kavīnāmuśanā kavīḥ ॥ 10-37 ॥

वृष्णी वंश का वासुदेव हूँ, पांडवों में धनञ्जय हूँ। मुनियों में व्यास हूँ, कवियों में शुक्राचार्य हूँ।
Of the Vrshnis, I am Vasudeva; of the Pandavas, I am Dhananjaya, Arjuna; of the munis, I am Vyasa; and of the poets, I am the poet Ushana.

दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् ।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥ १०-३८ ॥

Daṇḍo damayatāmasmi nītirasmi jigīṣatām ।
Maunaṃ caivāsmi guhyānāṃ jñānaṃ jñānavatāmaham ॥ 10-38 ॥

I am Ordinance sceptre of the rulers; and of the winners of victory, I am Policy; of the mysteries, I am Silence; and of the learned, I am Knowledge.

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन ।

न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥ १०-३९ ॥
Yaccāpi sarvabhūtānāṃ bījaṃ tadahamarjuna ।
Na tadasti vinā yatsyānmayā bhūtaṃ carācaram ॥ 10-39 ॥

Whatever is the Seed of all the forms of creation, that I am, Arjuna; and there is nothing created in the world which is created without me because, without cause, nothing exists, and that cause I am.

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परन्तप ।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥ १०-४० ॥
Nānto'sti mama divyānāṃ vibhūtīnāṃ parantapa ।
Eṣa tūddeśataḥ prokto vibhūtervistaro mayā ॥ 10-40 ॥

O Paramtapa, there is no end to my divine powers and presence. Hence this vast description of my powers has been spoken with a purpose: that is what you asked for.

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोऽशसम्भवम् ॥ १०-४१ ॥
Yadyadvibhūtimatsattvaṃ śrīmadūrjitameva vā ।
Tattadevāvagaccha tvam mama tejom'śasambhavam ॥ 10-41 ॥

Whatever form of reality there be, full of splendor, or grace, or energy, know Arjuna, that it has come into existence from a reflection of my power, presence and glory.

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥ १०-४२ ॥
Athavā bahunaitena kiṃ jñātena tavāryuna ।
Viṣṭabhyāhamidaṃ kṛtsnamekāṃśena sthito jagat ॥ 10-42 ॥

And, why bother about lots of knowledge of this world except this that having created and pervading this dynamic world, I abide herein with just a part of the manifestation of my power and glory.

CHAPTER-11

(विश्वरूप दर्शन)

अर्जुन उवाच ।

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ।

यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥ ११-१ ॥

Arjuna uvāca ।

Madanugrahāya paramaṁ guhyamadyātmasañjītam ।

Yattvayoktaṁ vacastena moho'yaṁ vigato mama ॥ 11-1 ॥

अर्जुन बोले:

मुझ पर अनुग्रह करके जो अत्यंत रहस्य वचन आपने अध्यात्मिक नाम से कहे हैं, उनसे मेरा मोह तो समाप्त हो गया।

Says Arjuna:

Out of love, kindness and grace, you have spoken words most mysterious and deeply concerned with the atman. With these words you have spoken, my illusion is gone.

भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया ।

त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम् ॥ ११-२ ॥

Bhavāpyayau hi bhūtānāṁ śrutau vistaraśo mayā ।

Tvattaḥ kamalapatrākṣa māhātmyamapi cāvyaṣyam ॥ 11-2 ॥

मैंने सृष्टि के सजन और विनाश के संबंध में भी विस्तार के साथ आपके वचन सुने। मैंने इस विस्तार के महत्व के विषय में भी सुना। हे कमल पत्राक्ष, यह सारा माहात्म्य अविनाशी है।

With these words I have heard of the mystery of birth and death of the forms of life in detail. And I have also heard from you, O Lord of lotus eyes, the lasting meaning and importance of those words.

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर ।

द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥ ११-३ ॥

Evametadyathāttha tvamātmānaṁ parameśvara ।

Draṣṭumicchāmi te rūpamaiśvaraṁ puruṣottama ॥ 11-3 ॥

हे योगेश्वर, हे पुरुषोत्तम, हे परमेश्वर, यह सारा जो आप अपने संबंध में कहते हैं, ठीक है, किंतु, मैं तो आपके रूप-ऐश्वर्य को देखना चाहता हूँ।

This is true, all as you say of yourself, Lord Supreme of the universe. Now O Supreme Purusha, I wish to see actually your form manifest and your divine glory.

मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो ।
योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥ ११-४ ॥

*Manyase yadi tacchakyam mayā draṣṭumiti prabho ।
Yogeshvara tato me tvam darśayātmānamavyayam ॥ 11-4 ॥*

यदि आप मानते हैं कि आपका रूप-ऐश्वर्य देखना मेरे लिए संभव है, तो, हे योगेश्वर, आप मुझे अपना अविनाशी रूप-ऐश्वर्य अवश्य दिखाने की कृपा करें।

If you feel that it is possible for me to see your form and glory, O Lord, O Yogeshwara, then reveal your eternal imperishable self to me.

श्रीभगवानुवाच ।
पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः ।
नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥ ११-५ ॥

*Śrībhagavānuvāca ।
Paśya me pārtha rūpāṇi śataśo'tha sahasraśaḥ ।
Nānāvidhāni divyāni nānāvarṇākṛtīni ca ॥ 11-5 ॥*

श्री भगवान बोले:

हे अर्जुन, मेरे रूप देखो, सैकड़ों, हजारों, नाना विविध के दिव्य रूप, नाना वर्ण क, नाना आकृति के।

Says Bhagawan Krishna:

See my forms, Partha, a hundredfold, a thousandfold, various and different, manifold. They are all of divine, celestial, uncountable forms and colors.

पश्यादित्यान्वसूनुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा ।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥ ११-६ ॥

*Paśyādityānvasūnurdṛānaśvinau marutastathā ।
Bahūnyadrṣṭapūrvāṇi paśyāścaryāṇi bhārata ॥ 11-6 ॥*

आदित्य को देखो, वसुओं को देखो, रुद्रों को देखो, अश्विनों को देखो, मरुतों को देखो। हे भरत, जो कभी न देखे हां उनको भी देखा। नाना आश्चर्य रूपों को देखो।

See the Adityas, Vasus, Rudras, Ashwins and the Maruts. Many many they are, never seen before, O Bharata, see the wonders.

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् ।
मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद् द्रष्टुमिच्छसि ॥ ११-७ ॥

*Ihaikastham jagatkrtsnam paśyādya sacarācaram ।
Mama dehe guḍākeśa yaccānyad draṣṭumicchasi ॥ 11-7॥*

यहां एक ही स्थान में सारे चराचर जगत को देख लो। हे गुडाकेश, यहां केवल मेरे शरीर में ही देख लो और भी देखलो जो चाहो।

See herein, together-in-one the entire universe, moving as well as non-moving, in my body, Gudakesha. And see also whatever else you want to see.

*न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥ ११-८ ॥
Na tu mām śakyase draṣṭumanenaiva svacakṣuṣā ।
Divyaṃ dadāmi te cakṣuḥ paśya me yogamaiśvaram ॥ 11-8॥*

किंतु, यह सब कुछ अपने साधारण नेत्रों से ही न देख सकोगे। अतः मैं तुम्हें दिव्य चक्षु दे देता हूँ। तो दिव्य चक्षु से तुम मेरा ऐश्वर्य देख सकोगे।

But you cannot see all this with these (your) own eyes. Therefore I will give you supernatural eyes, and then you can see the yoga of my power and grandeur.

*सञ्जय उवाच ।
एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः ।
दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥ ११-९ ॥
Sañjaya uvāca ।
Evamuktvā tato rājanmahāyogeśvaro hariḥ ।
Darśayāmasa pāarthāya paramaṃ rūpamaiśvaram ॥ 11-9॥*

संजय धृतराष्ट्र को कहते हैं:

राजन, ऐसा कहकर योगेश्वर कृष्ण ने अर्जुन को अपना ऐश्वर्य रूप दिखाया।

Says Sanjay to Dhrtarashtra:

Then having said this, O King, Yogeshwara Krishna, Lord Saviour from suffering, showed to Partha his universal form, power and grandeur.

*अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ ११-१० ॥
Anekavaktranayanamanekādbhutadarśanam ।
Anekadivyaḥbharanaṃ divyānekodyatāyudham ॥ 11-10॥*

उनके अनेक मुख, अनेक नेत्र, अनेक अद्भुत दर्शन, अनेक दिव्य आभूषण, अनेक आयुध उठाए हुए।

Uncountable faces, eyes, wondrous forms of being to see, infinite celestial beauties, uncountable supernatural divine weapons wielded by the Lord.

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ।
सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥ ११-११ ॥

*Divyamālyāambaradharam divyagandhānulepanam ।
Sarvāścaryamayam devamantanam visvatomukham ॥ 11-11 ॥*

अनेक माला, अनेक प्रकार के वस्त्र, अनक गंध का लेप, अनक आश्चर्यमय देव, स्वयं अनंत सर्वव्यापी।

Arjuna saw the Lord wearing celestial robes and garlands, divine perfumes and ointments, the Lord super-wondrous, cosmic form infinite, universal faces and visions.

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता ।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ॥ ११-१२ ॥

*Divi sūryasahasrasya bhavedyugapadutthitā ।
Yadi bhāḥ sadṛśī sā syādbhāsastasya mahātmanah ॥ 11-12 ॥*

यदि एक सहस्र सूर्य आकाश में एक साथ उदय हो जाएं। तो उन सबका प्रकाश भी कृष्ण महादेव से केवल मिलता-जुलता सा होगा।

If the light of a thousand Suns were to burst forth in space all at once, then that would be something like the light of that great Cosmic Personality.

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा ।
अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा ॥ ११-१३ ॥

*Tatraikastham jagatkṛtsnam pravibhaktamanekadhā ।
Apaśyaddevadevasya śarīre pāṇḍavastadā ॥ 11-13 ॥*

वहां कुरुक्षेत्र में अर्जुन ने समस्त जगत को देखा जो अनेक रूप का था। उस संसार को केवल देवों के देव कृष्ण के शरीर में देखा।

The Pandava saw in the body of the God of gods, there in One, the entire universe divided in uncountable different forms.

ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनञ्जयः ।
प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत ॥ ११-१४ ॥

*Tataḥ sa vismayāviṣṭo hr̥ṣṭaromā dhanañjayaḥ ।
Pranamya śirasā devam kṛtāñjalirabhāṣata ॥ 11-14 ॥*

धनञ्जय का शरीर विस्मयपूर्ण था, रोम रोम हर्षित था। अर्जुन ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और नतमस्तक होकर कहा:

Then Dhananjaya struck with wonder and mystery, with hair standing on end, bowed his head and with folded hands said to the Lord:

अर्जुन उवाच ।
पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वास्तथा भूतविशेषसङ्घान् ।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ-मृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥ ११-१५॥

Arjuna uvāca ।

Paśyāmi devāṁstava deva dehe sarvāṁstathā bhūtaviśeṣasaṅghān ।

Brahmāṇamīśaṁ kamalāsanastha-mṛṣīṁśca sarvānuragāṁśca divyān ॥ 11-15 ॥

अर्जुन बोले:

हे देव, आपके शरीर में सारे संसार के प्राणी विशेष के संघ देख रहा हूँ। जगदीश ब्रह्मा अपने कमलासन पर विराजमान हैं। ऋषियों को देख रहा हूँ। दिव्य सर्पों को देख रहा हूँ।

Says Arjuna:

Hey Deva, I see in your body all the devas and all the hosts of living beings, all of their special kinds, I see Brahma sitting on the lotus seat. I see the Sages, all of them, and I see the celestial serpents.

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम् ।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥ ११-१६॥

Anekabāhūdaravaktranetram paśyāmi tvāṁ sarvato'nantarūpam ।

Nāntaṁ na madhyaṁ na punastavādiṁ paśyāmi viśveśvara viśvarūpa ॥ 11-16 ॥

हे विश्वेश्वर, हे विश्वरूप, मुझे इस संसार का आदि मध्य या अंत कुछ नहीं दीख रहा। अनेक बाहु, पेट, मुख, नेत्र, क्या,क्या,

I see your uncountable arms, bellies, faces and eyes. I see you of infinite form every way. I see no end, no middle, and again no beginning of yours, O Lord of the universe of Universal forms.

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम् ।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद् दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥ ११-१७॥

Kirīṭinaṁ gadinam cakriṇam ca tejorāśiṁ sarvato dīptimantam ।

Paśyāmi tvāṁ durnirīkṣyaṁ samantād dīptānalārkyutyutim-aprameyam ॥ 11-17 ॥

आपको मुकुट धारी, गदाधारी, चक्रधारी, सर्वथा प्रकाशमान, आपको तो देखना भी कठिन है। सर्वत्र प्रकाशमान, अग्नि सूर्य के समान, तेजधारी प्रदीप्त अप्रेमय के रूप में आपको देख रहा हूँ।

I see you wearing the crown, the mace and the chakra, the circular disc, I see you a mountain of light blazing all ways. I see you beyond my capacity to behold. I see you burning as fire and the Sun and the light beyond compare.

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥ ११-१८ ॥

*Tvamaṅśaram paramaṁ veditavyaṁ tvamasya viśvasya paraṁ nidhānam ।
Tvamavyayah śāśvatadharmagoptā sanātanastvaṁ puruṣo mato me ॥ 11-18 ॥*

आप अक्षर ब्रह्म हैं, परम जानने योग्य हैं, इस विश्व के स्थान हैं, अविनाशी हैं, धर्म के रक्षक हैं, सनातन पुरुष हैं, मैं केवल इतना जानता हूँ।

You are the Lord Imperishable, the ultimate knowable; you are the highest haven and home of this entire world. You are the eternal living guardian of Universal Dharma, and you are the Eternal Purusha, I believe.

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्य-मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् ।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् ॥ ११-१९ ॥

*Anādimadhyāntamanantavīrya-manantabāhuṁ śaśisūryanetram ।
Paśyāmi tvāṁ dīptahutāśavaktraṁ svatejasā viśvamidam tapantam ॥ 11-19 ॥*

आपका आदि, मध्य, अन्त कुछ नहीं दीखता, शक्ति अनन्त हैं, बाहु अनन्त हैं। सूर्यचन्द्र आपके नेत्र हैं। आपका मुख अग्नि रूप है, अपने तेज से इस जगत को तपा रहे हैं।

I see you with no beginning, no middle, and no end. I see you with infinite strength and power, uncountable arms, suns and moons as eyes. I see you with an open mouth of fire burning this entire universe with your blazing heat and light.

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः ।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् ॥ ११-२० ॥

*Dyāvāpṛthivyōridamantaram hi vyāptaṁ tvayaikena diśaśca sarvāḥ ।
Dṛṣṭvādbhutaṁ rūpamugraṁ tavedaṁ lokatrayaṁ pravyathitaṁ mahātman ॥ 11-20 ॥*

पृथ्वी, द्यलोक, अंतरिक्ष, सब दिशाओं में आप व्याप्त हैं। हें महात्मन्, आपके अद्भुत उग्र रूप को देखकर सब दिशाएं, त्रिलोक भयभीत हैं।

The earth and heaven and the space within and all the quarters of space overflow with your presence, the sole One. And having seen this terrible form of yours, all the three worlds feel perturbed and tremble, O Great Soul.

अमी हि त्वां सुरसङ्घा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति ।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥ ११-२१ ॥

Amī hi tvāṃ surasaṅghā viśanti kecidbhītāḥ prāñjalayo grṇanti ।

Svastītyuktvā maharṣisiddhasaṅghāḥ stuvanti tvāṃ stutibhiḥ puṣkalābhiḥ ॥ 11-21 ॥

वे सब देवसंघ आप में प्रवेश करते हैं। कुछ भय के कारण हाथ जोड़े खड़े हैं। महर्षि संघ स्वस्तिवाचन के साथ स्तुति कर रहे हैं।

These hosts of gods enter your presence. Some of them, stricken with fear, fold their hands and do homage to you. The hosts of maharshis and siddhas sing praises, and with simple songs and adorations celebrate your power and presence.

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च ।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घा वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे ॥ ११-२२ ॥

Rudrādityā vasavo ye ca sādhyā viśve'śvinau marutaścoṣmapāśca ।

Gandharvayakṣāsurasiddhasaṅghā vīkṣante tvāṃ vismitāścaiva sarve ॥ 11-22 ॥

सभी रुद्र, आदित्य, वसु, साध्य, अश्विन, मरुत, पितर, गंधर्व, यक्ष, सुर, सिद्ध संत विस्मित होकर आपको देख रहे हैं।

Rudras, Adityas, Sadhyas, Vishvedevas, Ashwins, Maruts, ancestors, gandharvas, Yaskshas, hosts of gods and siddhas, gods and demoms all look at you with fear and wonder.

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहुरूपादम् ।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम् ॥ ११-२३ ॥

Rūpaṃ mahatte bahuvaktranetram mahābāho bahubāhūrupādam ।

Bahūdaram bahudamṣṭrākarālam dr̥ṣṭvā lokāḥ pravyathitāsta-thāham ॥ 11-23 ॥

हे महाबाहु, आपके महान् रूप को देखकर जो अनेक मुख, नेत्र, हाथ, पैर, अधर भयानक दंत, इन सबको देखकर सब और मैं भी भयभीत हूँ।

Having seen your cosmic form, grand, uncountable mouths and eyes, O great armed, many hands and feet, many bellies, many fearsome teeth, the different regions of the world see and feel afraid and amazed and so am I.

नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम् ।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो ॥ ११-२४ ॥

Nabhaḥspr̥śaṃ dīptamanekavarṇaṃ vyāttānaṃ dīptaviśālanetram ।

Dr̥ṣṭvā hi tvāṃ pravyathitāntarātmā dhṛtiṃ na vindāmi śamaṃ ca viṣṇo ॥ 11-24 ॥

हे विष्णु, अनेक वर्षा आकाश को छूने वाले खुले मुख, दीप्त विशाल नेत्र रूप को देखकर मैं न धैर्य पा रहा हूँ न शान्ति।

Seeing you, touching the skies, blazing with many colors, open mouth, blazing big eyes, I am touched to the deep and feel amazed at heart. I feel no peace, no stability of body and mind, O Vishnu.

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि ।
दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥ ११-२५॥

*Daṁṣṭrākarālāni ca te mukhāni dr̥ṣṭvaiva kālānalasannibhāni ।
Diśo na jāne na labhe ca śarma prasīda deveśa
jagannivāsa ॥ 11-25 ॥*

आपके कराल दंत, मुखों को, कालाग्नि समान भयंकर दांतों को देखकर मैं तो दिशा विहीन हो गया। मैं अशांत हो गया हूँ, देवेश कृपया दया करो, हे जगन्निवास।

Seeing your mouths, and terrible teeth, deadly and fiery, I find no way, nor do I find peace at heart. I pray, O shelter of the world, be pleased, lord of the gods and men, home of the universe.

अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः ।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः ॥ ११-२६॥

*Amī ca tvāṁ dhṛtarāṣṭrasya putrāḥ sarve sahaivāvanipālasaṅghaiḥ ।
Bhīṣmo droṇaḥ sūtaputrastathāsau sahāsmadīyairapi yodhamukhyaiḥ ॥ 11-26 ॥*

ये सब धृतराष्ट्र पुत्र, राजाओं समेत, भीष्म, द्रोण, कर्ण, हमारे योद्धा भी।

And those children of Dhṛtarashtra with all their royal supportive hosts, Bhishma, Drona and that son of the charioteer, Karna, including our chiefs of the armies.

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि ।
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥ ११-२७॥

*Vaktrāṇi te tvaramāṇā viśanti daṁṣṭrākarālāni bhayānakāni ।
Kecidvilagnā daśanāntareṣu sandṛśyante cūrṇitairuttamāṅgaiḥ ॥ 11-27 ॥*

आपके भयंकर दन्त मुखों में शीघ्रातिशीघ्र प्रवेश कर रहे हैं, कुछ ऐसे भी हैं कि शरीर अंगों का चूर्ण दातों के बीच में लगा है।

Hasten and run into your mouths, so terrible and fearsome with deadly teeth! Some of them, their best body parts crushed and pasted are seen sticking in between your teeth.

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति ।
तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति ॥ ११-२८ ॥

*Yathā nadīnām bahavo'mbuvegāḥ samudramevābhimukhā dravanti ।
Tathā tavāmī naralokavīrā viśanti vaktrāṅnyabhivijvalanti ॥ 11-28 ॥*

जैसे नदियों के प्रवाह, समुद्र की ओर प्रवेश करते हैं, वैसे ही ये वीर योद्धा आपके अग्नि रूप मुखों में प्रवेश करते हैं।

Just as the rushing torrents of rivers hasten towards the sea, so those hosts of the brave warriors rush into your fiery mouth.

यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः ।
तथैव नाशाय विशन्ति लोकास्-तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ॥ ११-२९ ॥

*Yathā pradīptam jvalanam pataṅgā viśanti nāśāya samṛddhavegāḥ ।
Tathaiva nāśāya viśanti lokāstavāpi vaktrāṅi samṛddhavegāḥ ॥ 11-29 ॥*

जैसे प्रदीप्त अग्नि के पतंगे स्वयं के नाश के लिए उड़ते हैं, ऐसे ही सब योद्धा आपके अग्नि रूप मुखों में प्रवेश करते हैं, कोई नहीं बचेगा।

Just as swarms of moths with all their haste and speed rush into the burning fire for their death, so do all men and warriors, even regions of the world at top speed, enter your mouths for their end.

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल-लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ।
तेजोभिरापर्युजगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो ॥ ११-३० ॥

*Lelihyase grasamānaḥ samantāl-lokānsamagrānvadanairjvaladbhiḥ ।
Tejobhirāpūrya jagatsamagram bhāsastavogrāḥ pratapanti viṣṇo ॥ 11-30 ॥*

अपने अग्नि मूखों से ग्रस्त करके सब वीरों को चाट रहे हैं, हे विष्णु, आपका तेज सबको परिपूर्ण करके समस्त जगत को तपा रहा है।

Eating and chewing wholly all the people and all the regions with your flaming mouths, you lick them up as you eat them up. Thus O Vishnu, your terrible blazing fires, filling the entire world with heat and light, scorch the world.

आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद ।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥ ११-३१ ॥

*Ākhyāhi me ko bhavānugrarūpo namo'stu te devavara prasīda ।
Vijñātumicchāmi bhavantamādyam na hi prajānāmi tava pravṛttim ॥ 11-31 ॥*

हे उग्र रूप, बताइये आप कौन हैं, हे देव, दया करो, हे आदि रूप भगवन्, मैं जानना चाहता हूँ आप चाहत क्या हैं, मैं नहीं जानता।

Say Bhagawan, who you are, so terrible in form and action. O first among devas, salutations to you. Be pleased, O Lord of the universe. I wish to know you, first and foremost of existence, nor do I know what your intent is.

श्रीभगवानुवाच ।

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ।

ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥ ११-३२ ॥

Śrībhagavān uvāca ।

Kālo 'smi lokakṣayakṛtpravṛddho lokānsamāhartumiha pravṛttaḥ ।

Ṛte 'pi tvāṃ na bhaviṣyanti sarve ye'vasthitāḥ pratyanikeṣu yodhāḥ ॥ 11-32 ॥

श्री भगवान् बोले:

मैं काल हूँ। लोकक्षय मेरी प्रकृति है, मुझे इस लोक समाज को समेट कर ले जाना है। तुम्हारे बिना भी जो योद्धा सामने खड़े हैं, कोई नहीं बचेगा।

Says Bhagawan Krishna:

I am Kala, death of the world, bent upon reducing the world to naught, my intent is to collect up and finish the world right now to the end. In spite of you, they shall not survive, all those warriors that stand in battle order in front of you.

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून् भुङ्क्व राज्यं समृद्धम् ।

मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ॥ ११-३३ ॥

Tasmāttvamuttiṣṭha yaśo labhasva jītvā śatrūn bhunṅkṣva rājyaṃ samṛddham ।

Mayaivaite nihataḥ pūrvameva nimittamātraṃ bhava savyasācin ॥ 11-33 ॥

इसलिए उठ खड़े हो, यश प्राप्त करो। शत्रुओं को जीतकर संपन्न राज्य को भोगो। ये तो मेरे द्वारा मरे पेड़ हैं। तुम तो निमित्त मात्र हो, हे सव्य साचो।

Therefore arise and win the honor of victory. Conquer the enemies and gain and enjoy the celebrative rule. Killed already they are, Sabyasachi, you have only to be the instrument of the ultimate order.

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान् ।

मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् ॥ ११-३४ ॥

Droṇaṃ ca bhīṣmaṃ ca jayadrathaṃ ca karṇaṃ tathānyānapi yodhavīrān ।

Mayā hatāṃstvaṃ jahi mā vyathiṣṭhā yudhyasva jetāsi raṇe sapatnān ॥ 11-34 ॥

द्रोण, भीष्म, जयद्रथ, कर्ण, तथा अन्य योद्धा मेरे द्वारा सब मारे गए हैं। भय मत कर, इन सब को मार, युद्ध में शत्रुओ को विनाश कर, जीतोगे अवश्य।

Drona and Bhishma, and Jayadratha and Karna, and all other warriors, killed they are already by me, kill them, worry not, fear not, fight, you are the conqueror of the enemies.

सञ्जय उवाच ।

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी ।

नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ॥ ११-३५॥

Sañjaya uvāca ।

Etacchruṭvā vacanaṃ keśavasya kṛtāñjalirvepamānaḥ kirīṭī ।

Namaskṛtvā bhūya evāha kṛṣṇaṃ sagadgadaṃ bhītabhītaḥ praṇamya ॥ 11-35 ॥

संजय बोले:

केशव के ये वचन सुनकर, हाथ जोड़कर कम्पायमान मुकुट धारी अर्जुन, अभी भी भयभीत, पर प्रसन्न होकर, कृष्ण को प्रणाम करके बोले।

Says Sanjaya:

Having heard these words of Keshava (Krishna), Arjuna, though trembling, folded his hands, bowed to him and said to Krishna --- though he was still afraid yet happy, and again bowed to him --- his voice now joyful and happy:

अर्जुन उवाच ।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।

रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः ॥ ११-३६॥

Arjuna uvāca ।

Sthāne hr̥ṣīkeśa tava prakīrtyā jagatprahr̥ṣyatyanurajyate ca ।

Rakṣāṃsi bhītāni diśo dravanti sarve namasyanti ca siddhasaṅghāḥ ॥ 11-36 ॥

अर्जुन बोले:

यह तो ठीक ही है, हे ऋषिकेश, कि आपके गण कीर्तन से जगत प्रसन्न है, आपके प्रति अनुराग भो है, राक्षस भी भय के कारण इधर उधर भाग रहे हैं, सिद्ध संघ आपको नमस्कार करते हैं।

Says Arjuna:

It is right and true, Hrishikesha, that by virtue of your greatness and glory, the world rejoices and celebrates your grandeur. The demons, struck by fear and terror, run about here and there in all directions, and all the hosts of Siddhas bow in homage to you.

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे ।

अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥ ११-३७ ॥

*Kasmācca te na nameranmahātman garīyase brahmaṇo'pyādikartre ।
Ananta deveśa jagannivāsa tvamakṣaram sadasattatparam yat ॥ 11-37 ॥*

और क्यों आपको नमस्कार ना करें, आप बड़े हैं, ब्रह्मा के भी आदिकर्ता है, आप अनन्त हैं, देवेश हैं, जगत के निवास हैं, अक्षर हैं, सत् और असत् दोनों से परे हैं।

And they, O Mahatman, Grand Soul of the universe, greater than Brahma, the original creator, why should they not do you homage? You are the Infinite, transcendent God of gods, ultimate haven and home of the universe, the eternal imperishable Being as well as Non-being and what is even beyond Being and Non-being.

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।

वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥ ११-३८ ॥

*Tvamādidevaḥ puruṣaḥ purāṇa-tvamasya viśvasya param nidhānam ।
Vettāsi vedyam ca param ca dhāma tvayā tataṁ viśvamanantarūpa ॥ 11-38 ॥*

आप आदि देव हैं, सनातन हैं, जगत के निधान हं, विद्वान हैं, वेद्य हैं, परमधाम हैं, अनंत रूप हैं, सर्व व्याप्त हैं।

You are the Original Eternal God, the primal person, the ultimate home of this universe, you are the real knower, worthy of being known, the ultimate home, you pervade this universe and you transcend the universe, the Infinite.

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।

नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥ ११-३९ ॥

*Vāyuryamo'gnirvaruṇaḥ śaśāṅkaḥ prajāpatistvaṁ prapitāmahaśca ।
Namo namaste'stu sahasrakṛtvaḥ punaśca bhūyo'pi namo namaste ॥ 11-39 ॥*

वायु, यम, अग्नि, वरुण, चंद्रमा, प्रजापति ब्रह्मा सब कुछ तो आप ही हैं। हे सर्वकर्ता आपको नमस्कार, शतहः नमस्कार।

You are Vayu, you are Yama, you are Agni, you are Varuna, and you are Chandrama. You are Prajapati and the great-grandfather of the universe. Homage to you again and again, O infinite creator and sustainer, doer of the acts of creation. Again and again, again and again, homage to you.

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।

अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ॥ ११-४० ॥

*Namaḥ purastādatha pṛṣṭhataste namo'stu te sarvata eva sarva ।
Anantavīryāmitavikramastvaṁ sarvaṁ samāpnoṣi tato'si sarvaḥ ॥ 11-40 ॥*

आगे से नमस्कार, पीछे से नमस्कार है, सवंत, हे सर्व, अनंत, शक्ति, अनंत विक्रम, हे सर्वव्यापी आप ही सर्व है।

Homage from the front, homage from behind, homage first and last, homage all way, all master, all time and ultimate, infinite strength and infinite action. You comprehend all, therefore you are all.

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।

अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥ ११-४१ ॥

Sakheti matvā prasabhaṃ yaduktaṃ he kṛṣṇa he yādava he sakheti ।

Ajānatā mahimānaṃ tavedaṃ mayā pramādātpraṇayena vāpi ॥ 11-41 ॥

सखा समझकर यदि मैंने, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखे, यदि आपकी महानता को ना जानकर ऐसा कह दिया हो प्यार में या प्रमाद में।

Not knowing this greatness and grandeur of yours, feeling that you are just a friend and companion, whatever I said either because of love or out of fun, or just in frankness, such as “O Krishna or Yadava or O friend”.

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु ।

एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥ ११-४२ ॥

Yaccāvahāśārthamasatkṛto 'si vihāraśayyāsanabhojaneṣu ।

Eko 'thavāpyacyuta tatsamakṣaṃ tatkṣāmaye tvāmahamaprameyam ॥ 11-42 ॥

या हंसी में, विहार में, सोते-बैठ, भोजन समय, अकले में या साथियों के समक्ष ऐसा कह दिया हो तो हे अविनाशी, हे अप्रेमय, क्षमा कीजिए।

Or just by the way of informal behavior, if I crossed the bounds of courtesy and insulted you at play or when relaxing or at the dinner table in front of you, I feel sorry and ask for forgiveness, O Lord of Infinity, beyond thought and measure.

पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।

न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥ ११-४३ ॥

Pitāsi lokasya carācarasya tvamasya pūjyaśca gururgarīyān ।

Na tvatsamo'styabhyadhikaḥ kuto'nyo lokatraye'pyapratima-prabhāva ॥ 11-43 ॥

आप चराचर जगत के पिता हैं, पूज्य हैं, सबसे बड़े हैं। आपके सामान कोई नहीं है, बड़ा तो कैसे होगा। त्रिलोक में आपका प्रभाव अप्रतिम है।

You are the father of the entire world moving or unmoving, greater than the greatest, and worthy of worship for the world. O Lord of unique power and influence, in all

the three worlds of Earth, heaven and all space, there is none equal to you, how can anyone greater be?

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ॥ ११-४४ ॥

*Tasmātpraṇamya praṇidhāya kāyaṃ prasādaye tvāmahamīśamīḍyam ।
Piteva putrasya sakheva sakhyuḥ priyaḥ priyāyārhasi deva soḍhum ॥ 11-44 ॥*

इसलिए प्रणाम करके, शरीर स, हे इश, हे पूजा के योग्य, जैसे पिता पुत्र को, सखा जैसे मित्र को, प्रिय जैसे प्रेमो को, क्षमा कर देता है, वैसे कृपया क्षमा कर दीजिए।

Therefore, doing homage to you with my head and body all bent in salutation, I beg of you, Lord of all, worthy of worship, Lord, be pleased to forgive. O Lord, as father to son, as friend to a friend, is dear and kind, so please forgive, you alone can forgive, dear for a dear friend.

अदृष्टपूर्व हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे ।
तदेव मे दर्शय देव रूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥ ११-४५ ॥

*Adrṣṭapūrvam hr̥ṣito'smi dr̥ṣṭvā bhayena ca pravyathitaṃ mano me ।
Tadeva me darśaya deva rūpaṃ prasīda deveśa jagannivāsa ॥ 11-45 ॥*

मैं प्रसन्न हूँ, आपको देखकर इतना प्रसन्न पहले कभी नहीं हुआ। यद्यपि मेरा मन भयभीत और व्याकुल है, अतः मैं हे देवेश, हे जगतपति, मुझे देव रूप दिखाइए और मन की शांति प्रदान कीजिए।
Having seen your cosmic form never seen before, I am beside myself with joy, even though my mind is still perturbed with fear. Therefore, for that very reason, show me your divine form as usual. O ultimate home of the world, God of gods, be pleased and come back do your divine form.

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तं इच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव ।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ॥ ११-४६ ॥

*Kirīṭinaṃ gadinam cakrahastam icchāmi tvāṃ draṣṭumahaṃ tathaiva ।
Tenaiva rūpeṇa caturbhujena sahasrabāho bhava viśvamūrte ॥ 11-46 ॥*

मैं आपको मुकुट धारी, गदाधारी, चक्रधारी रूप में वैसे ही देखना चाहता हूँ। उसी चतुर्भुज रूप में देखना चाहता हूँ। हे विश्वमूर्ति, हे सहस्रबाहु, उसी रूप में आ जाओ।

I want to see you the same way, wearing the crown, wielding the mace and chakra in the hand, O Lord of a thousand hands, universal form, reveal yourself the same four armed way for me.

श्रीभगवानुवाच ।

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात् ।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥ ११-४७ ॥

Śrībhagavānurvāca ।

Mayā prasannena tavārjunedaṃ rūpaṃ paraṃ darśitamātmayogāt ।

Tejomayaṃ viśvamanantamādyam yanme tvadanyena na dr̥ṣṭapūrvam ॥ 11-47 ॥

श्री भगवान बोले:

मैंने प्रसन्न होकर आत्मयोग से तुमको यह जो रूप विराट, अनंत आदि रूप दिखाया था, तुम्हारे अतिरिक्त यह रूप किसी और ने नहीं देखा।

Says Bhagawan Krishna:

Arjuna, I am happy with you, and for that very reason, I reveal this heavenly form of mine to you. Blazing brilliant it is, universal, infinite, primal, which form no one else other than you has ever seen.

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः ।

एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥ ११-४८ ॥

Na vedayajñādhyayanairna dānairna ca kriyābhirna tapobhirugraiḥ ।

Evamrūpaḥ śakya ahaṃ nṛloke draṣṭuṃ tvadanyena kurupravīra ॥ 11-48 ॥

हे कुरु प्रवीर, न वेद अध्ययन से, न दान से, न धर्म क्रियाओं से, न उग्रतपों से यह विश्वरूप इस मानव संसार में तुम्हारे अतिरिक्त किसी और से नहीं देखा जा सकता।

Neither with Vedic studies, nor with yajnas or charities, nor with rituals, nor with most austere tapas exercises, can I be seen in the human world by anyone other than you, best of the Kurus.

मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम् ।

व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥ ११-४९ ॥

Mā te vyathā mā ca vimūḍhabhāvo dr̥ṣṭvā rūpaṃ ghoramīdṛṅmamedam ।

Vyapetabhīḥ prītamanāḥ punastvaṃ tadeva me rūpamidaṃ prapaśya ॥ 11-49 ॥

भय न कर, विमूढ भाव भी न हो। मेरे इस घोर विश्वरूप को देखकर भय को त्याग, मन को प्रेममय बना ले, पुनः मेरे देवरूप को देख।

Feel neither perturbed, nor bewildered by seeing this terrible form of mine. Fear not, be happy at heart. Again see this, the same auspicious form of mine.

सञ्जय उवाच ।

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः ।

आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥ ११-५० ॥

Sañjaya uvāca ।

Ityarjunam vāsudevastathoktvā svakaṃ rūpaṃ darśayāmāsa bhūyaḥ ।

Āśvāsayāmāsa ca bhītamenam bhūtvā punaḥ saumyavapurmahātmā ॥ 11-50 ॥

संजय बोले:

हे राजन्, इतना कहने के पश्चात् महान् आत्मा कृष्ण भगवान् न अर्जुन को अपना देव रूप दिखाया और फिर सौम्य रूप होकर अपना मानवीय सौम्य रूप दिखा कर भयभीत अर्जुन को अश्वस्त किया।

Says Sanjaya:

Having said this to Arjuna, Vasudeva again revealed his gracious form to him.

Krishna, the Universal Soul, taking on his auspicious form again, gave Arjuna self-possession and self-confidence, otherwise stricken with fear earlier.

अर्जुन उवाच ।

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन ।

इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥ ११-५१ ॥

Arjuna uvāca ।

Dr̥ṣṭvedam mānuṣam rūpaṃ tava saumyaṃ janārdana ।

Idānīmasmi samvṛttauḥ sacetāḥ prakṛtiṃ gataḥ ॥ 11-51 ॥

अर्जुन भगवान् कृष्ण से बोले:

हे जनार्दन, आपके इस सौम्य मानवीय रूप को देखकर मैं शांत मन हो गया और सचेत होकर अपनी प्रकृति के अनुसार धैर्यवान् हो गया हूँ।

Arjuna says to Bhagawan Krishna:

Having seen this human auspicious form of yours, Janardana, I am come back to my steady self, self-conscious, with my real nature and character recovered.

श्रीभगवानुवाच ।

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम ।

देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः ॥ ११-५२ ॥

Śrībhagavānuvāca ।

Sudurdarśamidaṃ rūpaṃ dr̥ṣṭavānasi yanmama ।

Devā apyasya rūpasya nityaṃ darśanakāṅkṣiṇaḥ ॥ 11-52 ॥

भगवान् कृष्ण बोले:

मेरा जो रूप आज देखा तुमने, उसके दर्शन बड़े कठिन हैं, देवता भी इस रूप को देखने के लिए सदा उत्सुक रहते हैं।

Says Bhagawan Krishna:

Arjuna, this universal yet difficult form of mine which you have seen is rare, exceptional. Even the devas are always anxious to see this.

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया ।

शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥ ११-५३ ॥

Nāhaṃ vedairna tapasā na dānena na cejyayā ।

Śakya evaṃvidho draṣṭuṃ dṛṣṭavānasi mām yathā ॥ 11-53 ॥

जैसे मेरे इस रूप को तुमने देखा है उस रूप में मैं न वेदों से, न तप से, न दान से, और न यज्ञ से देखा जा सकता हूँ।

Neither by Vedas, nor by tapas, nor by charity, nor by Yajna, can I be seen this way, as you have seen.

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवविधोऽर्जुन ।

ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप ॥ ११-५४ ॥

Bhaktiyā tvananyayā śakya ahamevaṃvidho'rjuna ।

Jñātuṃ draṣṭuṃ ca tattvena praveṣṭuṃ ca parantapa ॥ 11-54 ॥

हे अर्जुन, मैं केवल अनन्य भक्ति से इस रूप में देखा जा सकता हूँ। हे तपस्वी, मैं इस रूप में जाना जा सकता हूँ, देखा जा सकता हूँ, भक्ति से तुम मुझको मिल भी सकते हो।

Arjuna, only by constant and exclusive bhakti (dedication) can I be this way known, seen, and joined in reality, O Paramtapa.

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।

निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥ ११-५५ ॥

Matkarmakṛnmatparamo madbhaktaḥ saṅgavarjitah ।

Nirvairah sarvabhūteṣu yaḥ sa mām eti pāṇḍava ॥ 11-55 ॥

हे पाण्डव, जो मेरे लिए कर्म करे, निसंग मेरा भक्त हो, सब प्राणियों से निबैर हो, केवल वही मुझ से मिलकर एक रूप हो सकता है।

O Pandava, do all Karma for me, be exclusively and extremely dedicated to me with no other attachment. One who has no feeling of enmity to any living being, comes to me and joins me.

CHAPTER-12

(भक्ति योग)

अर्जुन उवाच ।

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते ।

ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥ १२-१ ॥

Arjuna uvāca ।

Evam satatayuktā ye bhaktāstvām paryupāsate ।

Ye cāpyakṣaramavyaktaṁ teṣāṁ ke yogavittamāḥ ॥ 12-1 ॥

अर्जुन बोले:

जो भक्त आपसे सदा जुड़े रहते हैं, जो आप की उपासना करते हैं या जो अक्षर अव्यय के रूप में आप की भक्ति करते हैं, उनमें कौन ऐसे हैं जो योग्यतम कहे जा सकते हैं, अर्थात् जिनको उत्तम योगी कह सकते हैं।

Says Arjuna:

Thus, those who are constantly dedicated to you, worshippers who do service to you exclusively, on the one hand, and, on the other, those who worship and meditate on the imperishable and the unmanifest, undescrivable, Abstract Brahman, which one of these is closest to you as Yogi?

श्रीभगवानुवाच ।

मयावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते ।

श्रद्धया परयोपेताः ते मे युक्ततमा मताः ॥ १२-२ ॥

Śrībhagavān uvāca ।

Mayyāveśya mano ye mām nityayuktā upāsate ।

Śraddhayā parayopetāḥ te me yuktatamā matāḥ ॥ 12-2 ॥

श्री भगवान ने उत्तर दिया:

जो मेरे साथ मन को लगा कर, सदा मेरे साथ जुड़े रहते हैं और श्रद्धा पूर्वक मेरी उपासना करते हैं, वे मेरे युक्ततम भक्त हैं।

Says Bhagawan:

Those who concentrate their mind on me, and, constantly dedicated, worship me with unwavering faith, I take them to be closest to me.

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते ।

सर्वत्रगमचिन्त्यञ्च कूटस्थमचलन्ध्रुवम् ॥ १२-३ ॥

*Ye tvakṣaramanirdeśyamavyaktaṃ paryupāsate ।
Sarvatragamacintyañca kūṭasthamacalandhruvam ॥ 12-3 ॥*

जो अक्षर अनिर्देश्य अव्यक्तरूप में मेरी उपासना करते हैं, जो सर्वव्यापी अचिन्त्य रूप, कटस्थल और ध्रुव रूप में मुझे मानते हैं.....

And those that worship the immutable imperishable beyond form or indication, the still center of the universe and yet omnipresent on the move beyond thought....

*सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥ १२-४ ॥
Sanniyamyendriyagrāmaṃ sarvatra samabuddhayaḥ ।
Te prāpnuvanti māmēva sarvabhūtahite ratāḥ ॥ 12-4 ॥*

इंद्रियों को वश करके सर्व समबुद्धि, सब प्राणियों की सेवा करते हैं, व भी भक्ति पूर्वक मुझे ही प्राप्त होते हैं।

Those who control their senses and mind, universally equanimous, busy doing good to all living beings, they too join me.

*क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥ १२-५ ॥
Kleśo 'dhikatarasteṣāmyaktāsaktacetasām ।
Avyaktā hi gatirduḥkhaṃ dehavadbhiravāpyate ॥ 12-5 ॥*

जो अव्यक्त रूप में चित्त लगाकर मेरी उपासना करता ह, उसको कुछ कठिनाई अवश्य होती है, क्योंकि देहधारी मनुष्य के लिए निराकार का ध्यान कठिन है।

The effort of those, who meditate and concentrate their mind on the unmanifest, is longer and more difficult, because the unmanifest destination is harder to reach for those who exist in the body.

*ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः ।
अन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥ १२-६ ॥
Ye tu sarvāṇi karmāṇi mayi samnyasya matparāḥ ।
Ananyenaiva yogena mām dhyāyanta upāsate ॥ 12-6 ॥*

जो भी सबकर्मों को मुझे सौंपकर, निष्काम भाव से मेरा ही हो जाता है, जो अनन्य भाव से मेरा ध्यान करता है.....

Of course those who are dedicated to me and surrender all their karmas to me with exclusive loyalty in thought and action, and meditate on me only.

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि नचिरात्पार्था मय्यावेशितचेतसाम् ॥ १२-७ ॥

*Teṣāmahaṃ samuddhartā mṛtyusaṃsārasāgarāt ।
Bhavāmi nacirātpārtha mayyāveśitacetasām ॥ 12-7 ॥*

मैं उनका उद्धार करता हूँ, उनको संसार सागर के पार कर देता हूँ, क्योंकि वे मन लगाकर मेरे ही हो चुके होते हैं।

I am their savior from the dynamic world of mortality. I deliver them from the world of mortality in no time because, O Partha, their mind and consciousness is dedicated to me.

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥ १२-८ ॥

*Mayyeva mana ādhatsva mayi buddhiṃ niveśaya ।
Nivasiṣyasi mayyeva ata ūrdhvaṃ na saṃśayaḥ ॥ 12-8 ॥*

मुझे में ही मन को लगाओ, बुद्धि को मेरे ध्यान में निवेश करा, मुझ में बुद्धि निवेश करके इसके पश्चात् कोई चिन्ता कोई संशय नहीं।

Therefore concentrate your mind on me, dedicate your thoughts and intelligence to me. You will then live in me and thereafter there will be no doubt or question.

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् ।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय ॥ १२-९ ॥

*Atha cittam samādhātuṃ na śaknoṣi mayi sthiram ।
Abhyāsayogena tato māmicchāptuṃ dhanañjaya ॥ 12-9 ॥*

यदि मुझ में चित्त को न लगा सको तो, ह धनञ्जय, अभ्यास से, योग से, मन लगाओ। मुझे प्राप्त करने की इच्छा करो।

And if you are not able to concentrate your mind on me without disturbance, you will be able to do so by practice. Therefore, O Dhananjaya, try to follow me, with all your will.

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव ।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥ १२-१० ॥

*Abhyāse'pyasamartho'si matkarmaparamo bhava ।
Madarthamapi karmāṇi kurvansiddhimavāpsyasi ॥ 12-10 ॥*

यदि अभ्यास योग से भी मन न लगे तो सब कर्म मुझे सौंप दो। सब कर्मों को मुझे सौंप कर सिद्ध हो जाओगे।

And even if you are not able to follow me in practice, then whatever you do as your karma, dedicate that to me. Doing all your karma for me, thereby also you will come to success.

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः ।

सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ॥ १२-११ ॥

Athaitadapyaśakto 'si kartuṃ madyogamāśritaḥ ।

Sarvakarmaphalatyāgaṃ tataḥ kuru yatātmavān ॥ 12-11 ॥

यदि कर्म भी मुझे न सौंप सको तो मेरा ध्यान करके मन बुद्धि को आत्मा में लगाने का अभ्यास करो।

And if you are unable to do even that with dedication to me, then surrender the fruit of your karma to me with your mind and senses under the control of your atman.

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्भ्यानं विशिष्यते ।

ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥ १२-१२ ॥

Śreyo hi jñānamabhyāsājñānāddhyānaṃ viśiṣyate ।

Dhyānātkarmaphalatyāgastyāgācchāntiranantaram ॥ 12-12 ॥

अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है। ज्ञान से ध्यान श्रेष्ठ है। ध्यान से कर्म फल त्याग श्रेष्ठ है, कर्म फल त्याग क पश्चात् शांति ही शांति है।

Jnana (knowledge) is better than abhyasa (practice), and dhyana (meditation) is better than knowledge. Better than dhyana is the surrender of the fruit of your karma to me because lasting peace follows from the surrender of the fruit of action to me.

अद्वेषा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।

निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी ॥ १२-१३ ॥

Adveṣṭā sarvabhūtānāṃ maitraḥ karuṇa eva ca ।

Nirmamo nirahaṅkāraḥ samaduḥkhasukhaḥ kṣamī ॥ 12-13 ॥

सब प्राणियों से द्वेष न करने वाला, सबका मित्र, दयावान, ममता रहित, अहंकार न करने वाला, सुख-दुःख में एक समान क्षमावान् हं।

The man who is free from jealousy toward all things and people, who is universally friendly, who is compassionate toward all, who is free from attachment, free from pride, undisturbed in pleasure and pain, the man who forgives.

सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।

मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥ १२-१४ ॥

Santuṣṭaḥ satataṃ yogī yatātmā dr̥dhaniścayaḥ ।

Mayyarpitamanobuddhiryo madbhaktaḥ sa me priyaḥ ॥ 12-14 ॥

सब प्रकार सन्तुष्ट, निरंतर साधक, मन बुद्धि को आत्म बस करने वाला, दृढ़ निश्चयवान, मन बुद्धि को भगवान समर्पित, मेरा भक्त ऐसा योगी मुझे प्यारा है।

Who is equally happy in all situations, who is a dedicated yogi with self-control and strong determination, one who has surrendered his mind and intelligence to me with perfect dedication, that is dear to me.

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकात्रोद्विजते च यः ।

हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥ १२-१५ ॥

Yasmānnodvijate loko lokānnodvijate ca yaḥ ।

Harṣāmarṣabhayodvegairmukto yaḥ sa ca me priyaḥ ॥ 12-15 ॥

जो स्वयम् न परेशान होता, न किसी को परेशान करता। जो हर्ष, अमर्ष, भय, उद्वेग से मुक्त है, वह मेरा प्यारा है।

He that does not disturb or agitate the world and whom the world does not disturb or agitate, the man who is free from joy and excitation, anger, fear and passion, that is dear to me.

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।

सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥ १२-१६ ॥

Anapekṣaḥ śucirdakṣa udāsīno gatavyathaḥ ।

Sarvārambhaparityāgī yo madbhaktaḥ sa me priyaḥ ॥ 12-16 ॥

जो अपेक्षा मुक्त है, स्वच्छ है, दक्ष है, उदासीन है, प्रसन्न है, जो किसी कर्म को करते कर्म कता का अभिमान नहीं करता, ऐसा भक्त मेरा प्यारा है।

One who is free from expectation, who is clean and pure, expert (competent), undisturbed, above trouble, free from the pride of being doer, and dedicated to me, that man is dear to me.

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।

शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ॥ १२-१७ ॥

Yo na hr̥ṣyati na dveṣṭi na śocati na kāṅkṣati ।

Śubhāśubhaparityāgī bhaktimānyaḥ sa me priyaḥ ॥ 12-17 ॥

जो न प्रसन्न होता, न द्वेष करता, न शोक करता, न इच्छा करता, जो शुभ अशुभ त्यागी है, वही मेरा प्रिय है।

One who does not feel excited with joy, nor is he disturbed with jealousy, nor with worry nor with joy, one who is above excitement with good or bad, who is great but in dedication to me, that is dear to me.

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥ १२-१८ ॥

*Samah śatrau ca mitre ca tathā mānāpamānayoḥ ।
Śītoṣṇasukhaduḥkheṣu samah saṅgavivarjitaḥ ॥ 12-18 ॥*

जो शत्रु और मित्र दोनों के प्रति समान ह, मान अपमान में समान है। शीत उष्ण, सुख-दुःख दोनों में समान है, असंग है, मुझे प्रिय है।

He that is equanimous with friend and foe, in honor or dishonor, heat or cold, pleasure or pain, and undisturbed and above attachment.

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥ १२-१९ ॥

*Tulyanindāstutirmaunī santuṣṭo yena kenacit ।
Aniketaḥ sthiramatirbhaktimānme priyo naraḥ ॥ 12-19 ॥*

जिसके लिए निंदा स्तुति दोनों समान हैं, मौनी है, हर प्रकार में संतुष्ट है, घर नहीं ह पर सुखी है, स्थिर बुद्धि है, मेरा प्रिय है।

Appreciation and praise, depreciation and criticism is equal to him, silence is good, satisfied and happy is he anyway. No ambition for a palace, steady in thought and intelligence, all dedication, such a man is dear to me.

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते ।
श्रद्धधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥ १२-२० ॥

*Ye tu dharmyāmṛtamidaṁ yathoktaṁ paryupāsate ।
Śraddadhānā matparamā bhaktāste'tīva me priyāḥ ॥ 12-20 ॥*

जो धर्म अमृत जैसा कहा है, उसकी उपासना करत हैं, श्रद्धावान हैं, वह मुझे अत्यंत प्रिय है।

They who love and with heart and soul, accept and honor these immortal words of Dharma with faith and dedication, who are dedicated to me, they are very very dear to me.